महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015
e-paper:www.srushtiagronews.com

Posted atMalad NDPO Dated of Posting
4th to 5th for (1st to15th issue)
18th to 19th for (15th to 30th Issue)

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 2 अंक - 05 | मुंबई, 01 अप्रैल से 15 अप्रैल 2014 | मुल्य-2/- रुपए पृष्ठ -8

गेंदा (हजारा) की व्यवसायिक खेती (पृष्ठ 4 पर)

किसान भाई आत्महत्या न करें: पृथ्वीराज चव्हाण

मुंबई। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण ने किसानों की आत्महत्या के नए मामलों को देखते हुए किसानों से आग्रह किया कि उन्हें खुदकुशी नहीं करनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने एक बयान जारी कर कहा कि सरकार बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि से किसानों को हुए नुकसान से परिचित है। इस प्राकृतिक आपदा ने राज्य के 35 में से 28 जिलों को प्रभावित किया है।

चव्हाण ने कहा कि मैं अपने किसान भैयों को भरोसा दिलाता हूं कि मैं आपके साथ मजबूती से खड़ा हूं। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप भावना में न बहें, न ही निराश हों। हम आपकी मदद के लिए हर संभव कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि चुनावी आचार संहिता लागू हो जाने की वजह से सरकार मानक निर्देशों के अनुसार सहायता और राहत की कोशिशों में लगी हुई है। चव्हाण ने यह भी कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और अन्य केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात कर किसानों की मदद के लिए 5,000 करोड़ रुपये की मांग की है। उन्होंने कहा कि मैंने निर्वाचन आयोग के अधिकारियों से भी मुलाकात की है और राज्य में हुई तबाही की जानकारी दी है। (शेष पृष्ठ 2 पर)

किसान नई तकनीक का लाभ लें...एस. एस. राठौड़

जल्द ही सृष्टि एग्रो राजस्थान संस्करण लाने जा रहा है ! इस मौके पर प्रोग्रेसिव किसान श्री का प्रेम सिंह नाथावत राम नारायण यादव, हीरा लाल स्वामी ,महेन्द्र जी का अभिनन्दन किया गया! इस कार्यक्रम में वैज्ञानिक एस के गुप्ता ने भी भूमि के गिरते जल स्तर पर चिन्ता जताई तथा किसानो को बेर आंवला ,बील नींबू आदी फसलों को लगाने पर ज़ोर दिया!

ये साथ ही इस संघोष्ठी मे किसानो की संख्या उनकी जागरूकता का प्रमाण दे रही थी !

चौमू जयपुर. कृषि विज्ञान केन्द्र में सृष्टि एग्रो के सौजन्य से जागरूक किसान संगोष्ठी व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया !ख्ख्ख के प्रमुख एस. एस. राठौड़ की अध्यक्षता में हुये इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुये एस. एस. राठौड़ ने कहा वर्तमान समय मे कृषि मे अधिक जागरूकता की आवश्यकता है! किसान बूंद बूंद सिचाई पद्धति अपनाएं!जिससे पानी की बचत होगी ! किसान मिट्टी की भी जाँच कराएं .जिससे अधिक पैदावार हो

सृष्टि एग्रो के प्रधान संपादक सुरेश शर्मा ने कहा किसानो को गुणवत्ता खेती के लिये कृषि साहित्य का भी अध्यन करना चाहिये ! उन्होने समाचार पत्र की भूमिका व आवश्यकता के बारे मे बताया साथ ही उन्होने यह जानकारी दी कि

अल नीन्यो के डर को मौसम विभाग ने बताया साजिश

नई दिल्ली, ऑस्ट्रेलिया से लेकर अमेरिका तक के मौसम

वैज्ञानिक खतरनाक 'मॉन्स्टर अल नीन्यो' पैटर्न उभरने के बेहद साफ संकेत मिलने का दावा कर रहे हैं। दावा है कि इससे इस साल साउथ एशिया में सूखा पड़ सकता है, लेकिन भारत के मौसम विभाग ने ऐसे अनुमानों की आलोचना की है और आरोप लगाया है कि ऐसी भविष्यवाणियों के जरिए देश के कमोडिटीज और स्टॉक मार्केट्स में उथल-पुथल मचाने की साजिश रची जा रही है। स्पेनिश भाषा में अल नीन्यो का मतलब होता है लिटल बॉय। हवा और गर्म जलधारा की दिशा में बदलाव के पैटर्न (शेष पृष्ठ 2 पर)

राष्ट्रीय आपदा घोषित करने से क्या होगा, धैर्य रखे किसान: शरद पवार

पुणे. केंद्रीय कृषिमंत्री शरद पवार ने कहा कि इस प्राकृतिक आपदा को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने से क्या होगा। किसान इस संकट का धीरज के साथ सामना करें। सरकार उनके साथ है। पुणे स्थित शक्कर संकुल में वसंतदादा शुगर इंस्टीट्यूट (वीएसआई) की बैठक हुई। बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में पवार ने कहा कि राज्य में ओलावृष्टि के कारण बनी हुई स्थिति को सरकार राष्ट्रीय आपदा घोषित करे ऐसी मांग विपक्ष कर रहा है। लेकिन इस प्राकृतिक आपदा को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने से क्या होगा। उससे कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। आचार संहिता के कारण आज की स्थिति में प्रभावित किसानों को मदद उपलब्ध कराने में दिक्कतें

आ रही हैं। इस संबंध में मंत्रिमंडल की बैठक बुलाई गई है। उसमें निणर्य होने की संभावना है।

केंद्रीय कृषि मंत्री पर महाराष्ट्र भरोसा नहीं कर सकता-मोदी

वर्धा। नरेंद्र मोदी ने वर्धा में एनसीपी नेता और केंद्रीय कृषिमंत्री शरद पवार पर जमकर हमला बोला। मोदी ने कहा कि कांग्रेस को वाराणसी में मेरे खिलाफ प्रत्याशी नहीं मिल रहा है। कांग्रेस मोदी पर उपाय ढूंढने में समय बर्बाद करने के बजाय देश की समस्याएं सुलझाने का काम करना चाहिए।

मोदी ने पवार पर हमला बोलते हुए कहा कि केंद्रीय कृषिमंत्री इस राज्य से होने के बावजूद किसान आत्महत्या कर रहे है। उन्हें किसानों से कुछ लेना-देना नहीं है। उन्होंने कहा कि जवान और किसान कांग्रेस के शासन में सुरक्षित नहीं है। उन्होंने किसान को खत्म किया है अब जवान खत्म करेंगे। बीजेपी की सत्ता आने पर किसानों के माल को सही दाम मिलेगा। बीजेपी की सत्ता आने पर कपास की पैदावार करनेवाले किसानों के लिए 'फाइव एफ' का फार्मूला देंगे। उन्होंने कहा कि जहां कपास की पैदावार

होती है, वहीं पर धागा बनना चाहिए और जहां धागा बनता है वहीं पर कपड़ा तैयार होना चाहिए और फैशन भी वहीं होना चाहिए। लेकिन कांग्रेस की सरकार को इसका एहसास नहीं है।

ओलावृष्टि से परेशान किसान ने की खुदकुशी

सटाणा. बेमौसम बारिश व ओलावृष्टि से बड़े पैमाने पर हुए नुकसान के चलते तहसील के दरेगांव निवासी एक किसान ने जहरीली दवा पीकर खुदकुशी कर ली। आत्महत्या करने वाले किसान का नाम आत्माराम सीताराम पवार है। गत एक सप्ताह से चल रही प्राकृतिक आपदा से क्षेत्र की सैकड़ों एकड़ में खड़ी फसल नष्ट हो गई। बेमौसम बारिश व ओलावृष्टि से दरेगांव के युवा किसान आत्माराम की अनार व चने की फसल बूरी तरह से प्रभावित हुई। कर्ज लेकर आत्माराम ने अनार व चने की फसल लगाई थी। लेकिन ओलावृष्टि ने आंखों के सामने पूरी फसल बरबाद की। कर्ज की चिंता, मानसिक तनाव से परेशान होकर आत्माराम ने जहरीली दवा पीकर अपनी जीवनयात्रा समाप्त कर दी।

तहसील व विकास खण्डस्तर पर संवादाताओं की आवश्यकता

मुंबई से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी कृषि पक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो उपरोक्त राज्य के विकास खंड एंवम तहसील स्तर पर संवादाता नियुक्त करने है. संवादाता बनने के लिए कृषि विकास की जानकारी एंवम ग्रामीण कृषि से सम्बन्धित होना अति आवश्यक है!कृषि विषय के जानकार व कृषि आदान से जुडे व्यक्तियों को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी !संवादाता की नियुक्ति कमीशन आधार पर होगी , संवादाता का मुख्य कार्य सृष्टि एग्रो के अधिक से अधिक सदस्य बनाना व विज्ञापन लेना रहेगा

अपने आसपास की घटनाओं पर नज़र रखना,व उसका समाचार सृष्टि एग्रो में भेजना प्रमुख दायित्व मे शामिल रहेगा अगर आप उपरोक्त शती से सहमत है तो सृष्टि एग्रो से जुडने के लिए सम्पर्क करें.

022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,
info@srushtiagronews.com

संपादकीय

संकट में कृषि

दुनिया भर में किसान अन्नदाता कहे जाते हैं लेकिन आज की व्यवस्था में वे दाने-दाने को मोहताज हैं. किसानों के उपजाए अनाज से गांवों से लेकर महानगरों तक लोग मुनाफा कमा रहे हैं मगर किसान अपनी बदनसीबी पर आंसू बहा रहे हैं. सूखा हो या बाढ़ की आपदा, किसान उतना परेशान नहीं होता लेकिन जब उसे उसकी फसल की उचित कीमत नहीं मिलती तब वह अंदर तक हिल जाता है. बात पारंपरिक फसल की हो या नकदी फसल की, बम्पर उत्पादन के बावजूद खेतों में आई खुशहाली मंडी तक पहुंचते-पहुंचते मायूसी में बदल जाती है. कर्ज के बढ़ते दबाव में यही किसान आत्महत्या के लिए मजबूर हैं. कृषि कार्य के अलाभकारी व घाटे ने बड़े पैमाने पर किसानों को आत्महत्या की तरफ ढकेला है. ऐसे ही घाटे की खेती और इससे जुड़ी आय तथा रोजगार के अभाव में किसान गांवों से शहर की ओर भाग रहे हैं. 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद खेती की विकास दर 4 प्रतिशत के लगभग बताई गई जो दिनों दिन घटती जा रही है. नौवीं-दसवीं तथा ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजनाओं के बावजूद कृषि विकास दर चिंताजनक ही रही. 1998-2000 के बीच जो कृषि विकास दर 3.6 प्रतिशत थी, वह भी घट कर अब 2 प्रतिशत से नीचे आ गई है. वर्ष 2008-09 तथा 2010-11 के आंकड़े के हिसाब से भारत की जीडीपी में कृषि का योगदान 17.8 प्रतिशत है जबकि कृषि पर देश की 60 फीसद से ज्यादा आबादी निर्भर है. अंदाज लग सकता है कि कृषि विकास की धीमी गति और ज्यादा लोगों की निर्भरता से देश की 60 फीसद जनता का जीवन संकट में आ सकता है. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएसओ) के आंकड़े के अनुसार भारत के 45 प्रतिशत किसानों को यदि कोई और काम मिल जाए तो वे खेती बाड़ी छोड़ने की राजी हैं. इसी अध्ययन के अनुसार एक किसान खेती की आमदनी से अपने जीवन का लगभग 30 प्रतिशत ही खर्च निकाल पाता है. एनएसएसओ का ही आंकड़ा बताता है आज 80-85 प्रतिशत किसान कर्ज के बोझ से दबे हैं. ये आंकड़े केवल उन किसानों के हैं, जिनके पास अपनी जमीन है. भारत में बहुत-से ऐसे लोग हैं जो कृषि पर निर्भर हैं लेकिन उनके पास कोई जमीन नहीं है. वे सिर्फ मजदूर हैं. भारत में जमीन के असमान वितरण का उदाहरण देखिए कि यहां 83 प्रतिशत किसानों के पास 2 हेक्टेयर से भी कम और 6 प्रतिशत के पास 4 हेक्टेयर से ज्यादा जमीन है. जाहिर है छोटे किसानों की संख्या बहुत ज्यादा है. यह आंकड़ा भी एनएसएसओ का है. समाज विज्ञानी तथा खेती के विशेषज्ञ कह रहे हैं कि जमीन का यह असमान वितरण देश के कृषि विकास के लिए नुकसानदायक है.

इसका सीधा असर जमीन की पैदावार पर पड़ता है. सच यह है कि बड़ी संख्या में ऐसे किसान हैं, जो खेती करते हैं लेकिन जमीन के मालिक नहीं हैं. ये बटाईदार कहलाते हैं. खेती का उत्पादन घटने की यह भी एक वजह है कि बटाईदार किसान पैदावार बढ़ाने के लिए अतिरिक्त प्रयास नहीं करते और खेत मालिक तो पैदावार या कृषि उपज बढ़ाने में कोई निवेश यों ही नहीं करते. इससे बड़ी तादाद में भूमिहीन जनता को हर तरह से असुरक्षा का सामना करना पड़ता है. इन्हीं कारणों से भूमि सुधारों की बात की जाती रही है. ऐसे भूमि सुधार जिसमें जमीन का समान बंटवारा हो और जमीन पर वास्तव में खेती करने वाले का स्वामित्व हो. आजादी के समय के भूमि सुधार आधे-अधूरे थे. इस सम्बन्ध में जो कानून बने, वे भी कमजोर बने. भूमि के असमान वितरण का यह भी असर होता है कि खुद के संसाधनों और औपचारिक स्रोतों से ऋण के अभाव में छोटा किसान खेती में उत्पादन बढ़ाने के लिए निवेश नहीं कर सकता तथा भूमि वितरण की इस असमानता की वजह से बड़े किसानों का दबदबा बढ़ता है. उदारीकरण के बाद खेती मुनाफे का व्यवसाय रही नहीं. सरकार द्वारा खेती को दी जाने वाली सहायता में कमी से कृषि लागत काफी बढ़ गई हैकथित विकास की चकाचौंध में किसानों और उनके व्यापक सवालों की अनदेखी ठीक नहीं. मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड आदि प्रदेशों में किसानों के अंदर पल रहा गुस्सा कभी भी ज्वालामुखी बन सकता है. किसानों ने सर्व सेवा संघ, राष्ट्र निर्माण अभियान व विभिन्न किसान संगठनों के माध्यम से सत्याग्रह और आंदोलन की राह पकड़ ली है. शोषण और समाज को किसानों के मूल सवालों से रू-ब-रू होना ही पड़ेगा तभी भविष्य की शांति और सुरक्षा की गारंटी होगी.

सुरेश शर्मा -प्रधान संपादक

किसान भाई....

प्रधानमंत्री ने केंद्रीय कृषि मंत्री शरद पवार की अध्यक्षता में सुशील कुमार शिंदे, पी.चिदंबरम, जयराम रमेश और एम एस आहलुवालिया की एक उच्चस्तरीय समिति गठित की है जबकि केंद्रीय टीम ने नुकसान के मूल्यांकन की प्रक्रिया पूरी कर ली है।

चव्हाण का बयान विदर्भ के किसानों द्वारा 10 अप्रैल को होने वाले चुनाव के दौरान नन ऑफ द एबव (नोटा) विकल्प का इस्तेमाल किए जाने की धमकी देने के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। विदर्भ के किसानों की योजना बीजेपी के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी से संसद और विधानसभा में 10 फीसदी प्रतिनिधित्व की मांग करने की है।

अल नीन्यो के डर...

को अल नीन्यो कहा जाता है, जिससे प्रशांत महासागर के कुछ हिस्सों में सतह का तापमान बढ़ जाता है। अल नीन्यो के चलते दुनिया के कई हिस्सों में जहां ज्यादा बारिश होती है, वहीं कई अन्य इलाकों में सूखे के हालात बन जाते हैं। 2002 और 2004 में जब अल नीन्यो पैटर्न मजबूत हुआ था तो भारत में सूखा पड़ा था। 2009 में जब अल नीन्यो उभरा तो भारत को चार दशकों के सबसे कमजोर मॉनसून का सामना करना पड़ा। इसके चलते खाने-पीने की चीजों के दाम उछल गए थे और आरबीआई को महंगाई पर काबू पाने के लिए मौद्रिक नीति में सख्ती बरतनी पड़ी थी। अमेरिकी वैज्ञानिकों का कहना है कि इस साल मौसम से जुड़े डेटा साफ संकेत दे रहे हैं कि 1997-98 जैसा खतरनाक अल नीन्यो फिर सामने आ सकता है और यह पैटर्न एक साल या इससे ज्यादा समय तक बना रह सकता है। उनका कहना है कि इसके चलते साल 2015 अब तक का सबसे गर्म साल हो सकता है। हालांकि भारत का मौसम विभाग (घ्श्ऊ) इस बात पर यकीन नहीं कर रहा है कि 'लिटल बॉय' भारत में मानसून का हाल खराब कर सकता है।

मधुमक्खी पालन : स्वरोजगार के साथ कृषि उत्पादन मे

डॉ अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि प्रसार
सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर, राजस्थान

प्रश्नः मधुमक्खी पालन क्या है एवं इसका क्या महत्व है ?

उत्तरः देश की बढ़ती आबादी के कारण वर्तमान में उपलब्ध सभी संसाधन कम पड़ते नजर आते है। सरकारों एवं अनेक संगठनों द्वारा देश की समृद्वि हेतु विकास कार्यक्रम चलाये जा रहे है परन्तु आबादी के दबाव के कारण समस्याऐं मिट नहीं पा रही है। कृषि जोतों का छोटा होना, मशीनीकरण के फल स्वरूप कृषि क्षेत्र में उपलब्ध श्रम तथा पशुपालन की उपेक्षा, कम्प्यूटरीकरण के कारण राजकीय एवं अराजकीय संस्थानों में रोजगार के सीमित अवसर तथा उदारीकरण एवं मशीनीकरण के कारण बड़े उधोगों का प्रभावित होना आदि ऐसी स्थितियां है, जिनसे बेरोजगारी बढ़ रही है। इन परिस्थितियों में "मधुमक्खी" पालन स्वरोजगार का एक अच्छा साधन है। मधुमक्खी पालन कम लागत, कम श्रम, कम समय में अधिक लाभ देने वाला कृषि का व्यवसायिक घटक है, जो अन्य कृषि घटकों से स्पर्धा न करते हुए उनके आर्थिक लाभ को भी पृथक से बढाता है। मधुमक्खी से मधु तो प्राप्त होता ही है परन्तु फूलों पर इनके आवागमन से परपरागण भी होता है। जिसके फलस्वरूप अनेक फसलों की पैदावार तथा गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी होती है। इसके साथ ही मधुमक्खियों से अनेक गुणकारी पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस, रायल, जैली, मोम विष इत्यादि भी प्राप्त होते हैं।

मधुमक्खी पालन लधु–सीमांत कृषक, महिलाऐं, कृषिश्रमिक, भूमिहीन ग्रामीण बेरोजगार आदि अर्द्ध अथवा पूर्ण व्यवसाय के रूप में अपना सकते है। उनके लिए मधुमक्खी पालन आय का बहुत बढ़िया स्त्रोत है जिसमें भूमि की आवश्यकता नहीं पड़ती तथा मधुमक्खी का रख–रखाव व प्रबन्ध बच्चे, बूढ़े व औरतें भी कर सकती है। मधुमक्खी पालन का व्यवसाय शुरू करने से पूर्व मधुमक्खियों, काम में आने वाले उपकरण, उपयुक्त पेड पौधे आदि के बारे में सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। मधुमक्खी पालन को सही ढंग से करने हेतु यह आवश्यक है कि इसके जीवन चक्र एवं संगठन के बारे में मौन पालक को पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

भारत में मौन पालन सदियों से चला आ रहा है। हालांकि 60 के दशक के पहले मौन पालन केवल भारतीय मधुमक्खी "ऐपिस सिराना" से ही हुआ करता था परन्तु 60 के दशक के बाद विदेशी मौन "ऐपिस मेलिफेरा" को भारत के हिमाचल प्रदेश में सफलतापूर्वक लाने के बाद अधिकतर मौन पालन इस मधुमक्खी से होने लगा। इस मधुमक्खी में भारतीय मधुमक्खी की तुलना में अधिक शहद एकत्रित करने की क्षमता है। इस मधुमक्खी के आने से भारत में शहद के क्षेत्र में क्रान्ति आ गई हैं। जहां ऐपिस मेलीफेरा अधिक मधु स्त्रोत वाले क्षेत्रों के लिए लाभकारी हैं वहां भारतीय मधुमक्खी ऊंचाई वाले क्षेत्रों में बहुत उपयोगी है।

प्रश्नः मौन परिवार क्या है यह कैसे कार्य करता है ?

उत्तरः मधुमक्खी को ही मौन कहते है। यह एक सामाजिक एवं संगठित परिवार के रूप में रहती है। एक कालोनी (मौन परिवार) में निम्न सदस्य होते है।

1 रानी – यह आकार में सबसे बड़ी होती है तथा इसका मुख्य कार्य प्रजनन है। इसका जीवन काल करीब 2–3 साल होता है एवं इस दौरान यह कई लाख अन्डे देती है, जिससे परिवार बढ़ता रहता है।

2. नर मौन – इनका कार्य रानी से मिलकर प्रजनन में सहयोग देना है। रानी अपने जीवन काल में एक बार ही मिलती है। अतः ये नई रानी से प्रजनन क्रिया हेतु मिलने के अतिरिक्त कोई काम नहीं करते तथा खाते अधिक है। अतः प्रजनन क्रियापूर्ण होने के बाद श्रमिक मौन इन्हें छत्ते (कालोनी) से भगा देती है। इस तरह ये मर जाते है।

3. श्रमिक मौन – एक कालोनी में लाखों कमेरी मक्खी होती है। ये अपूर्ण मादा मक्खी होती है अतः प्रजनन के अलावा अन्य समस्त क्रियाऐं इनके द्वारा ही सम्पन्न की जाती है। रानी का भोजन एवं देख–भाल, बच्चों का लालन–पालन, छत्ते की सफाई, परागण एवं मकरंद एकत्रित कर शहद तैयार करना, विपरीत मौसम में छत्ते को ठंडा या गर्म रखना आदि। इनका जीवन काल 2 माह से लेकर 6 माह तक होता है जो कार्य की मात्रा पर निर्भर है।

प्रश्नः मधुमक्खी पालन हेतु उपयोगी उपकरण क्या–क्या है ?

उत्तरः 1) मुंह रक्षक जाली, 2) दस्ताने, 3) स्वार्म बैग, 4) स्टैण्ड , 5) लकड़ी का बक्सा , 6) फ्रेम, 7) शहद निष्कासन मशीन, 8) स्मोकर, 9) नर पाश, 10) भोजन पात्र, 11) चाकू (शहद छत्ता काटने का चाकू)

प्रश्नः मधुमक्खी पालन हेतु उपयुक्त समय क्या है ?

उत्तरः मधुमक्खी पालन आरंभ करने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर–नवम्बर एवं फरवरी–मार्च है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि फसलों और पेड पौधों का फूलने का समय क्या है। नीम, यूकेलिप्टस शीशम, करंज, गुलमोहर, बबूल–प्रजाति के वृक्ष, सनाय, नीबू वर्गीयफल, सरसों घनिया, अजवाइन, सौंफ आदि बहुतायत से एक साथ फूलों के अंबार वाली वनस्पतियों पर मधुमक्खियां सहजता से पाली जाए तो दोहरा लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्नः मधुमक्खी पालन हेतु उपयुक्त तापमान क्या है ?

उत्तरः मधुमक्खी के लिये 28–30 सेन्टीग्रेट तापमान उपयुक्त रहता है। मई जून में जिन क्षेत्रों मे तापमान 35 सेन्टीग्रेट से ऊपर जाता है, तो ठंडे स्थानों पर स्थानान्तरण करना पड़ता है। वर्षा ऋतु में उत्पादन कम होता है।

प्रश्नः मधुमक्खी हेतु उपयुक्त पेड़ एवं फसलें कौन– कौन सी हैं ?

उत्तरः मधुमक्खी के लिये बारह महीने मधु रस देने वाली फसलें तथा पेड–पौधे आस पास होने चाहियें। इसका उत्पादन उपयोगी फूलों पर अधिक निर्भर करता है। कुछ उपयोगी फसलें एवं पौधे निम्न हैः–

सरसों तोरिया, बरसीम, सूरजमुखी, ढैंचा तिल चना, कुसुम, मक्का, गाजर, मिर्च, कद्दू वर्गीय सब्जी।

सेब, नाशपाती, लीची, आंवला, बेर, शहतूत, जामुन, नींबू, अमरूद।

शीशम, नीम, युकेलिप्टस, शू–बबूल, सहजना, अमलतास, गुलमोहर, रवैर, इमली अर्जुन बोटल, ब्रुश, कीकर।

प्रश्नः मौन गृह के क्या–क्या उत्पाद है ?

उत्तरः मौन गृह का मुख्य उत्पाद शहद है, इसके अलावा मोम, मौनीविष रायल जैली, आदि उत्पादन भी होते है परन्तु साधारण रूप से शहद एवं मोम ही मधुमक्खी पालक एकत्रित कर पाता है।

प्रश्नः क्या मधुमक्खी फसल उत्पादन में सहायक है ?

उत्तरः मधुमक्खी हमारी फसलों के उत्पादन में सहायक है। जिन फसलों में पर–प्रजनन होता है, उसमें मधुमक्खी अन्य कीटों की तुलना में अधिक उपयोगी एवं सुरक्षित है। इसके द्वारा परागण होने के फलस्वरूप फसलों में उत्पादन वृद्धि के साथ–साथ, फल एवं बीज की किस्म अच्छी पाई गई। अनुसंधानों से यह भी सिद्व हो चुका है कि मधुमक्खी के द्वारा परागण होने से फसलें एक साथ एवं तुलनात्मक जल्दी पकती है। इससे किसानों को अपनी कृषि क्रियाओं के निष्पादन में सुगमता रहती है। मधुमक्खी ऐसी फसलों को स्वयं तलाश लेती है तथा मधुरस एकत्रित करने हेतु इधर से उधर घूमती है। अतः सहज में ही पर–परागण कार्य को भी पूरा कर देती है, यदि हम इसे प्राकृतिक प्रजनन विशेषज्ञ कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

फसलों में फूल खिलते समय अच्छे संचयन के लिये खेत में 3–4 स्थानों पर मौन वंशों के बक्से रखने चाहिये। औसतन 10–30 प्रतिशत तक फसलों में इससे उत्पादन वृद्वि होती है। मौसम एवं फसल के आधार पर उत्पादन वृद्वि फसलों में 60 प्रतिशत एवं इससे भी अधिक पाई गई है। मौन पालक को मधुमक्खी पालन से एक रूपये का लाभ होता है। जबकि किसान की फसल में इसके अनुपात में 16–20 रू तक का लाभ मिलता है। मधुमक्खी पालन से आर्थिक लाभ पूरा–पूरा मिल सके, इसके लिये पालकों को यह ज्ञान होना जरूरी है कि क्षेत्र में मधुरस वाले पौधे या फसलें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहे। यदि उस क्षेत्र में मधुरस वाले पौधे/फसलें जिस माह में उपलब्ध नहीं हो उस दौरान मौंन–वंशों को उपयुक्त स्थान पर स्थानान्तरित करना होगा।

प्रश्नः क्या फसलों पर कीटनाशकों के छिडकाव से मधुमक्खी कोई प्रभाव पडता है ?

उत्तरः विभिन्न शंकाओं में कीटनाशकों के छिडकाव से मधुमक्खियों की क्षति की आशंका प्रमुख है, इसके लिए मधुमक्खियों को उनके बक्सें में 48 घण्टे तक बंद रखने का कारगर उपाय हैं। एक और महत्वपूर्ण बात फूल खिलते समय रसायनों का छिडकाव करना परागण पर प्रतिकूल असर डालकर कीट बीमारियों की तुलना में आर्थिक नुकसान पहुंचा सकता, अतः रसायनों के छिडकाव का समय थोडा परिवर्तित कर ले। फिर भी छिडकाव जरूरी हुआ तो शाम को (4 बजे बाद) करें, तब मधुमक्खियों की सक्रियता कम हो जाती है, फिर उन्हें 48 घण्टें तक बंद रखना चाहिए जिससे कि रसायनों की घातकता का कम से कम प्रभाव पडे।

मधुमक्खियों की कार्य करने की दूरी सामान्यतः 1–2 किमी. होती है, पर विशेष परिस्थितियों में 3–4 कि.मी. तक भी मकरंद–पराग हेतु पहुंच जाती है।

प्रश्नः मधुमक्खी पालन से कितना आर्थिक लाभ हो सकता है ?

उत्तरः 1. मधुमक्खी पालन से फसलों एवं फलदार पौधों के उत्पादन में वृद्वि होती है।

2. मधुमक्खी के एक बक्सा (2–3 कालोनी) से एक साल में औसतन 60 किलो शहद एवं 2.5–3 किलो मोम प्राप्त हो जाता है।

3. 50 बक्सों की एक यूनिट से प्रथम वर्ष में औसत 40–50 हजार रू. शुद्व लाभ मिल सकता है। धीरे–धीरे यह लाभ आगामी वर्षो में बढ़ सकता है। बड़ी इकाई तथा कुशल प्रबन्धन से शुद्व लाभ और अधिक मिलेगा। उत्पादन फूलों की उपलब्धता प्रबन्धन एवं विपणन पर निर्भर होगा।

प्रश्नः मधुमक्खी पालन कैसे शुरू करें ?

उत्तरः मधुमक्खी पालन आरम्भ करने से पहले किसी भी समीप के मधुमक्खी पालन केन्द्र से मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण लेना आवश्यक है। सफल मौन पालन हेतु क्षेत्र में उपलब्ध उपयोगी पुष्पाधारी पौधे (मौन चर), उनका पुष्पन समय तथा अवधि आदि के बारे में जानकारी आवश्यक है। प्रशिक्षण के पश्चात् अनुकूल मौसम से जानकारी आवश्यक है। प्रशिक्षण के पश्चात् अनुकूल मौसम में निम्नलिखित किसी भी प्रकार से मधुमक्खी वंश प्राप्त किए जा सकते हैं :–

1.आधुनिक मौन गृहों में पाली हुई मधुमक्खियां किसी मधुमक्खी पालक अथवा राजकीय मधुमक्खी पालन केन्द्र से प्राप्त की जा सकती है।

2.जंगल में पल रही मधुमक्खियों के झुण्ड को पकड़ कर आधुनिक मौन गृहों में स्थापित किया जा सकता है।

3.दीवारों में पल रहे मौनवंशों को पकड़ कर आधुनिक मौन गृहों में स्थापित किया जा सकता है।

प्रश्नः मौन वंश खरीदते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिये ?

उत्तरः मौन वंश खरीदते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये

वंश में कम से कम चार फ्रेमों पर मधुमक्खी हो जिनमें अण्डे, शिशु एवं पर्याप्त मात्रा में खुराक हो।

रानी की आयु का पता हो। वह अण्डे देने वाली किशोर तथा अच्छी गुणवत्ता वाली हो।

वंश में अधिक से अधिक कमेरी मक्खियां व विभिन्न आयु का ब्रूड होना चाहिए।

निक्खट्टू व उनके शिशु अधिक न हो।

वंश प्रायः बसन्त या पतझड़ में ही खरीदे क्योंकि इस समय वंश को अच्छी तरह से निरख परख की जा सकती है।

मधुमक्खियां खरीदते समय यह ध्यान रखा जाए कि फ्रेमें तथा मौनगृह उचित मानक के हों। भारतीय मधुमक्खी के लिए आई.एस.आई. मौन गृह तथा इटालियन मधुमक्खी के लिए लैगस्ट्रोथ मौन गृह का प्रयोग करें।

प्रश्नः मधुमक्खी पालन (मौन गृह रखने) के लिए किस स्थान का चुनाव करना चाहिये ?

उत्तरः मौन गृह रखने के लिए जगह का चुनाव बहुत ही आवश्यक पहलु है आमतौर पर मौनपालक मौनवंश की उपेक्षा अपनी सहुलियत का अधिक ध्यान रखता है। जगह का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि उस जगह पर या उसके आसपास लगभग 1–2 किलोमीटर अर्धव्यास पर ऐसे पेड–पौधे होने चाहिए जो वर्ष में लम्बी अवधि तक पुष्पन में होते हों इन्हें पुष्पन के अच्छे स्त्रोत के बारे में भी ज्ञान होना चाहिए।1.पुष्पधारी पौधों में पुष्पन एक के बाद एक लगातार होनी चाहिए। आसपास ही प्राकृतिक झरना या ताजा पानी का प्रबन्ध होना चाहिए। 2.मौन गृह रखते समय यह ध्यान रखा जाए कि उनका प्रवेश द्वार पूर्व या दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए क्योंकि ऐसा रखने से मौन वंशों पर सबसे पहले सूर्य की किरणें पड़ती है तथा मौन जल्दी ही काम करने के लिए घर से बाहर निकलती है।

फसलों में जीवाणु खाद का उपयोग करके पैदावार बढायें

डॉ. पंकज शर्मा
प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र, बानसूर (अलवर)

वायुमण्डल मे 78 प्रतिशत नत्रजन की विपुल मात्रा उपलब्ध है। इस नत्रजन को पौधे स्वयं उपयोग करने मे सक्षम नही है। एजोटोबेक्टर एवं राइजोबियम जीवाणु वायुमण्डल की इस निष्क्रिय नत्रजन को सक्रिय अवस्था मे परिवर्तित कर पौधों के उपयोग के योग्य बनाते है जिसे पौधों द्वारा आसानी से ग्रहण कर लिया जाता हैं । इसी प्रकार फास्फेट विलेयक जीवाणु मृदा मे उपलब्ध स्थिर एवं अघुलनशील फास्फोरस को अपनी जैविक क्रियाओं द्वारा घुलनशील अवस्था मे परिवर्तित कर पौधों के उपयोग करने योग्य बनाते है।

जीवाणु खाद मे वायुमण्डल की नत्रजन अथवा भूमि के फास्फॅारस को पौधों को उपलब्ध कराने वाले जीवाणुओं को जीवित अवस्था मे लिग्नाइट अथवा कोयले के चूरे मे मिलाकर रखा जाता है। ये जीवाणु तीन प्रकार के होते हैं इनमे नत्रजन उपलब्ध कराने वाले दलहनी फसलों के लिये राईजोबियम एवं खाद्यान्न फसलों के लिए एजेटोबेक्टर तथा समस्त फसलों को अघुलनशील फास्फॅारस को उपलबध कराने के लिए फास्फेट विलेयक जीवाणु होते हैं भूमि मे इन जीवाणुओं की संख्या इतनी कम होती है कि जितना लाभ मिलना चाहिये वह नही मिलता है इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि पौधों की जडों के आसपास इन लाभदायक जीवाणुओं की संख्या अधिक से अधिक रहे । इसी कारण से जीवाणु खाद मे इन विशेष प्रकार के लाभदायक जीवाणु की संख्या एक ग्राम मे दस करोड से अधिक रखी जाती है। इस प्रकार 200 ग्राम वाले जीवाणु खाद के एक पैकेट मे 2000 करोड लाभदायक जीवाणु होते है तथा एक हैक्टेयर के लिए 600 ग्राम जीवाणु खाद अर्थात 12000 करोड जीवाणु बीजोपचार अथवा जडोपचार से उपयोग करने की सिफारिश की जाती है।

जीवाणु खाद से बीजोपचार एवं जडोपचार के माध्यम से पौधों की जडो के आसपास लाभकारी जीवाणुओं एवं अन्य सूक्ष्मजीवों की भारी संख्या निर्मित की जाती है। पौधों के जडतंत्र के आसपास उपस्थित इन सूक्ष्म जीवियों की सक्रियता बढ जाने से पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ जाती है जिन्हे पौधों द्वारा आसानी से ग्रहण कर लिया जाता है।

राइजोबियम (सहजीवी जीवाणु)
यह जीवाणु दलहनी फसलों की जडों पर छोटी छोटी गुलाबी ग्रन्थियां बनाकर उनमे सहजीवी की तरह रहते है। इन्ही गाठों मे जीवाणुओं द्वारा भूमि मे नत्रजन स्थिरीकरण का कार्य सम्पन्न होता है। ग्रन्थियों के माध्यम से स्थिर की गई वायुमण्डल की नत्रजन , पौधों को पोषण हेतु प्राप्त होती है। अलग अलग फसल के लिये राइजोबियम की अलग अलग प्रजाति होती है इसलिये थैली के ऊपर लिखी फसल का राइजोबियम उसी फसल के लिये काम मे लेना चाहिये ।

ऐजेटोबेक्टर (मुक्तजीवी जीवाणु)
यह जीवाणु खाद , गैर दलहनी फसलों मे उपयोग की जाती है। ऐजेटोबेक्टर जमीन मे स्वतंत्र रूप से रहकर अपना भोजन मृत कार्बनिक पदार्थो से प्राप्त करते है। साथ ही वायुमण्डल की नत्रजन को ग्रहण कर भूमि मे छोडते रहते है। यह नत्रजन पौधों को उपलब्ध हो जाती है। ऐजेटोबेक्टर के 200 ग्राम के एक पैकेट के जीवाणुओं द्वारा लगभग 14 किलोग्राम यूरिया के बराबर वातावरण की नत्रजन भूमि मे स्थिर की जाती है।

फास्फेट विलेयक जीवाणु (पी.एस.बी)
किसान द्वारा फसलों को फास्फोरस मुख्यतः डीएपी एवं सिंगल सुपर फास्फेट के रूप में दिया जाता है। इसका एक बडा भाग अघुलनशील हो जाता है जिसे पौधे ग्रहण नही कर सकते है। पी.एस.बी. इसी अघुलनशील फास्फॅारस को घुलनशील बना देता है जिससे यह पौधों को तुरन्त उपलब्ध हो जाता है। एक अनुमान के अनुसार 200 ग्राम के एक पैकेट मे उपस्थित फास्फेट विलेयक जीवाणु लगभग 22 किलोग्राम डी.ए.पी.के बराबर फास्फॅारस पौधों को उपलब्ध करा देते है।

जीवाणु खाद के लाभः–

- राइजोबियम व ऐजेटोबेक्टर जीवाणु खाद के प्रयोग से भूमि मे नत्रजन की उपलब्धता मे वृद्धि होती है जो अगले मौसम मे बोई जाने वाली फसल हेतु भी उपयोगी होती है।
- पी.एस.बी. जमीन मे पडे अनुपलब्ध फास्फॅारस को घुलनशील बनाकर पौधों को उपलब्ध कराता है।
- उर्वरकों की तुलना में बहुत सस्ता है।
- पौधे जल्दी विकसित होते है तथा भूमि से अधिक मात्रा मे पोषक तत्व प्राप्त करते है।
- जीवाणुओं द्वारा विसर्जित स्त्राव बीजों की अंकुरण क्षमता मे वृद्धि कर पौधों के विकास मे सहायक होते है।
- जीवाणु खाद के लगातार प्रयोग से मृदा की भौतिक एवं रासायनिक दशा तथा जैविक क्रियाशीलता मे सुधार होता है।
- यह बारानी खेत मे पोषक तत्वों की पूर्ति के लिये बहुत ही उपयोगी है।

जीवाणु खाद उपयोग विधि

प्रभावी जीवाणुओं की पर्याप्त संख्या पौधों की जडों के आसपास कृत्रिम रूप से निर्मित करने के उद्धेश्य से जीवाणु खाद से बीजोपचार किया जाता है। इसी प्रकार कुछ फसलों मे रापित की जाने वाली पौध मे जीवाणु खाद से जडोपचार किया जाता है।

बीजोपचार :– बीजों को उपचारित करने के लिये आवश्यकतानुसार पानी मे 250 ग्राम गुड घोले। इस घोल को ठंडा कर इसमे 600 ग्राम जीवाणु खाद घोल कर अच्छी तरह मिला ले। अब इस घोल को एक हैक्टेयर क्षेत्र के बीजों पर छिडकते हुए हल्के हाथों से बीजों को पलटते जावें जिससे बीजों के ऊपर जीवाणु खाद की एक बारीक परत लग जावे। उपचारित बीजों को किसी छायादार स्थान पर सूखाकर शीघ्र ही बुवाई कर देनी चाहिए।

बीजों को फंफूदीनाशक तथा कीटनाशक दवा से भी उपचारित करना हो तो सर्वप्रथम फंफूदीनाशक तत्पश्चात कीटनाशक दवा से तथा अन्त मे जीवाणु खाद से उपचारित करना चाहिए। यदि एक से अधिक जीवाणु खाद से बीजोपचार करना हो जैसे राइजोबियम के साथ पी एस बी अथवा ऐजेटोबेक्टर , ऐसी अवस्था मे जीवाणु खाद की दोनो किस्मों को आपस मे मिश्रित करके सबसे आखिर मे बीजो का उपचार किया जाना चाहिए।

जडोपचार :– जीवाणु खाद का प्रयोग रोपित की जाने वाली फसलों की पौध में करना हो तो पौध की जडों को रोपाई से पूर्व जीवाणु खाद के घोल मे लगभग 15 मिनट तक डुबोकर रखे तथा बाद मे इनकी भूमि मे रोपाई करनी चाहिए।

भूमि उपचार के अर्न्तगत कई बार बुवाई हेतु प्रयुक्त किये जाने वाले बीज अथवा रोपित की जाने वाली पौध के जडोपचार पश्चात जीवाणु खाद की कुछ मात्रा शेष बची रहती हैं ।अनेक बार किसी विशेष कारण से , जीवाणु खाद उपलब्ध न होने के कारण भी इसका प्रयोग बीज उपचार के रूप मे संभव नही हो पाता , ऐसी स्थिति मे जीवाणु खाद को 25 किलो गोबर मिश्रित नम मिट्टी मे अच्छी प्रकार से मिलाकर पूरे खेत मे सांयकाल छिटक कर खेत की सिंचाई कर देवें। ऐसा करना लाभदायक रहता है।

सावधानियॉ

जीवाणु खाद को पैकेट पर लिखी फसल के लिए ही पैकेट पर अंकित अन्तिम तिथि से पूर्व प्रयोग करें। जीवाणु खाद को गर्मी तथा धूप से बचाकर रखें एवं इसका भण्डारण ठंडे स्थान पर करे। पैकेट पर लिखे निर्देशों का पालन करें। जीवाणु खाद को रासायनिक उर्वरकों एवं दवा के साथ नहीं मिलाना चाहिए।

दो-तिहाई से कम गेहूं की बिक्री हुई

नई दिल्ली : 95 लाख टन में से 58 लाख टन गेहूं का उठान केंद्रीय पूल से खुले बाजार बिक्री योजना (ओएमएसएस) के तहत केवल 58 लाख टन गेहूं की ही बिक्री हुई है। जबकि सरकार ने 95 लाख टन गेहूं का आवंटन किया था। इस तरह सिर्फ 61 फीसदी गेहूं की बिक्री हो पाई है। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के गोदामों से बल्क कंज्यूमर के लिए गेहूं की बिक्री बंद कर दी गई है लेकिन स्मॉल ट्रेडर्स को बिक्री जारी है ओएमएसएस के तहत बल्क कंज्यूमर को गेहूं की बिक्री बंद कर दी गई है लेकिन स्मॉल ट्रेडर्स को 9 टन (एक ट्रक) के आधार पर बिक्री की जा रही है। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर गेहूं की खरीद मध्य प्रदेश से 25 मार्च को और अन्य राज्यों से पहली अप्रैल से खरीद शुरू की जायेगी। इसीलिए ओएमएसएस के तहत गेहूं की बिक्री बंद कर दी गई। ओएमएसएस के तहत कुल 58 लाख टन गेहूं बिका है। अभी तक हुई कुल बिक्री में सबसे ज्यादा गेहूं हरियाणा से 11.39 लाख टन, पंजाब से 7.64 लाख टन, दिल्ली से 7.61 लाख टन, राजस्थान से 3.32 लाख टन, तमिलनाडु से 3.93 लाख टन, मध्य प्रदेश से 6.24 लाख टन, महाराष्ट्र से 3.57 लाख टन, पश्चिमी बंगाल से 2.60 लाख टन, जम्मू-कश्मीर से 1.70 लाख टन, आंध्र प्रदेश से 1.57 लाख टन, उड़ीसा से 1.42 लाख टन और गुजरात से 1.72 लाख टन बिका है। आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने 21 जून को ओएमएसएस के तहत 95 लाख टन गेहूं बेचने का फैसला किया था। इसके तहत 85 लाख टन गेहूं की बिक्री बल्क कंज्यूमर को और 10 लाख टन की बिक्री स्मॉल ट्रेडर्स को करनी थी। केंद्रीय पूल में पहली मार्च को 397.22 लाख टन खाद्यान्न का स्टॉक मौजूद है। कुल खाद्यान्न के स्टॉक में 208.39 लाख टन गेहूं और 188.83 लाख टन चावल मौजूद है। वर्ष 2013-14 में गेहूं की रिकॉर्ड पैदावार 956 लाख टन होने का अनुमान है

किसान से मक्का खरीद में उद्योग को फायदा

नई दिल्ली अगर भारत में मक्का उद्योग कारोबारियों और ब्रोकरों के बजाय किसानों से सीधे खरीद करता है तो उसे 50 रुपये प्रति क्विंटल का फायदा होता है। आज भारतीय मक्का सम्मेलन में जारी अध्ययन में कहा गया है कि कृषि जोत का आकर छोटा होने के कारण भारत का मक्का उद्योग किसानों से सीधे इस जिंस की खरीद नहीं कर पाता है। हालांकि वर्ष 2004-05 से 2013-14 के बीच देश में मक्के का उत्पादन 5.5 फीसदी बढ़ा है। त्पादन में बढ़ोतरी की मुख्य वजह हाइब्रिड बीजों का इस्तेमाल बढ?ा है। अध्ययनों में तो यहां तक कहा जा रहा है कि 2050 तक देश में 90 फीसदी रकबे में हाइब्रिड बीज उगाए जाएंगे। वर्ष 2004-05 से 2013-14 के दौरान इस जिंस की खपत करीब 4 फीसदी और रकबा 2.5 फीसदी बढ़ा है। देश से हर साल करीब 30-50 लाख टन मक्के का निर्यात होता हैभारत वर्ष 2014-15 में करीब 40 लाख टन मक्के का निर्यात कर सकता है।' जिंस बाजार अस्थिर भारत में अलनीनो से मॉनसून पर असर पड? की खबरों के बीच जिंस बाजारों में एक लंबे अरसे के बाद कृषि जिंसों में उतार-चढ़ाव दर्ज किया जा रहा है। अल नीनो का मतलब मध्य एवं पूर्वी प्रशांत महासागर में पानी गर्म होने और पश्चिम में ठंडा होने से है। यह स्थिति हर 4 से 12 वर्षों में पैदा होती है। इससे पहले इसका असर 2009 में मॉनसून पर पड़ा था, जिससे उस साल करीब चार दशकों का सबसे भयंकर सूखा रहा था।

बायोटेक कंपनियां शोध पर करेंगी ज्यादा निवेश

नई दिल्ली जीन संवर्धित (जीएम) फसलों की 200 से ज्यादा ट्रांसजैनिक किस्मों के भूमि परीक्षण को मंजूरी मिलने के सरकारी फैसले से उत्साहित बायोटेक्नोलॉजी कंपनियों ने बीजों के शोध एवं विकास पर भारी निवेश की योजना बनाई है। इस क्षेत्र के नियामक जेनेटिक इंजीनियरिंग अप्रूवल कमेटी ने भी अंतिम बाधा दूर कर दी है। कमेटी ने भी जीएम बीजों की 11 किस्मों को मंजूरी दे दी है और अपनी अगली बैठक में और किस्मों पर विचार करने का आश्वासन दिया है। पिछले एक साल के दौरान शोध एवं विकास में निवेश रुक गया है, क्योंकि अपना फायदा चाहने वाले समूहों विशेष रूप से गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) के विरोध के कारण इसे नियामकीय मंजूरी मिलने पर अनिश्चितता बनी हुई थी। अब उद्योग जीएम बीजों की ट्रांसजैनिक किस्मों में निवेश करने के लिए फिर उत्साहित है। 'भारत के बायोटेक्नोलॉजी क्षेत्र के शोध एवं विकास में निवेश बढ? की उम्मीद है, जो पिछले साल बंद कर दिया था। उम्मीद है कि वित्त वर्ष 2014-15 से विकसित बीजों के शोध एवं विकास पर 600 करोड़ रुपये का वार्षिक निवेश होने लगेगा। एक वर्ष पहले बायोटेक्नोलॉजी कंपनियां हर साल समग्र रूप से करीब 200 करोड़ रुपये का निवेश कर रही थीं।' निवेश के अलावा बायोटेक्नोलॉजी कंपनियां कृषि फसलों के ज्यादा उत्पादन के लिए जीन के अणु और जैविक स्थानांतरण पर काम कर रही हैं

एमसीएक्स को नए कांट्रेक्ट से रोक सकता है एफएमसी

नई दिल्ली देश के सबसे बड़े कमोडिटी एक्सचेंज एमसीएक्स में जिग्नेश शाह और फ्यूचर टैक्नोलॉजीज इंडियन लि. (एफटीआईएल) की कुल हिस्सेदारी घटाकर दो फीसदी नहीं की जाती है तो उसे नए कमोडिटी कांट्रेक्ट लांच करने से रोका जा सकता है। एनएसईएल घोटाले की जांच के बाद फॉरवर्ड मार्केट्स कमीशन (एफएमसी) ने शाह और उनकी कंपनी एफटीआईएल को कुल हिस्सेदारी घटाकर दो फीसदी करने का निर्देश दिया था। एफएमसी ने एनएसईएल में 5600 करोड़ रुपये के भुगतान संकट पर शाह को सबसे बड़ा लाभार्थी बताते हुए उन्हें कोई भी एक्सचेंज संचालित करने के लिए अयोग्य करार दिया था।

प्रतिकूल मौसम से गेहूं की सरकारी खरीद 11% घटने की संभावना

नई दिल्लीनिर्यातक, फ्लोर मिलें व स्टॉकिस्ट खरीदेंगे ज्यादा गेहूं चालू रबी विपणन सीजन 2014-15 में गेहूं की सरकारी खरीद तय लक्ष्य से 11.2 फीसदी घटकर 270-275 लाख टन ही होने की आशंका है। असमय की बारिश से गेहूं की फसल को नुकसान हुआ है, साथ ही रोलर फ्लोर मिलर्स, निर्यातकों और स्टॉकिस्टों द्वारा गेहूं की ज्यादा खरीद किए जाने की संभावना है। खाद्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बिजनेस भास्कर को बताया कि चालू रबी विपणन सीजन 2014-15 में गेहूं की न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीद तय लक्ष्य 310 लाख टन से घटकर 270-275 लाख टन ही रहने का अनुमान है। पिछले रबी विपणन सीजन में एमएसपी पर 250.84 लाख टन गेहूं की खरीद हुई थी। विश्व बाजार में गेहूं के दाम बढ? से निर्यातकों की खरीद भी इस साल बढ़ेगी। स्टॉकिस्टों के साथ ही रोलर फ्लोर मिलर्स की भी खरीद में इस बार ज्यादा भागीदारी रहेगी। वैसे भी उत्पादक क्षेत्रों में मौसम खराब होने से गेहूं की फसल को नुकसान हुआ है, साथ ही अप्रैल में भी मौसम विभाग ने मौसम प्रतिकूल रहने की ही भविष्यवाणी की है, जिससे गेहूं की नई फसल की क्वालिटी प्रभावित होने की आशंका है। उन्होंने बताया कि भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) ने मध्य प्रदेश में गेहूं की सरकारी खरीद शुरू कर दी है तथा अन्य राज्यों पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश से सरकारी खरीद पहली अप्रैल से शुरू हो जायेगी, लेकिन खराब मौसम से नई फसल की आवक में देरी होगी, जिससे सरकारी खरीद में भी देरी होने के आसार हैं। पंजाब से गेहूं की खरीद का लक्ष्य 110 लाख टन, मध्य प्रदेश से 80 लाख टन, हरियाणा से 65 लाख टन, उत्तर प्रदेश से 30 लाख टन, राजस्थान से 18 लाख टन, गुजरात से 1.50 लाख टन, उत्तराखंड से 1.60 लाख टन, महाराष्ट्र से 0.17 लाख टन, पश्चिमी बंगाल से 0.20 लाख टन और अन्य राज्यों से 3.53 लाख टन का है। गेहूं की खरीद के लिए देशभर में 12,076 खरीद केंद्र खोले जायेंगे। चालू रबी विपणन सीजन 2014-15 के लिए केंद्र सरकार ने गेहूं के एमएसपी में 50 रुपये की बढ़ोतरी कर भाव 1,400 रुपये प्रति क्विंटल तय किया है। कृषि मंत्रालय के दूसरे आरंभिक अनुमान के अनुसार वर्ष 2013-14 में गेहूं की रिकॉर्ड पैदावार 956 लाख टन होने का अनुमान है लेकिन प्रतिकूल मौसम से उत्पादन अनुमान से कम होने की आशंका है। केंद्रीय पूल में पहली मार्च को 397.22 लाख टन खाद्यान्न का स्टॉक मौजूद है। कुल खाद्यान्न के स्टॉक में 208.39 लाख टन गेहूं और 188.83 लाख टन चावल मौजूद है।

जीएम फसलों के परीक्षण के लिए राज्य अब भी नहीं तैयार

नई दिल्ली, जीन अभियांत्रिकी स्वीकृति समिति (जीईएसी) ने 11 फसलों की प्रायोगिक खेती को पिछले हफ्ते मंजूरी दे दी, लेकिन अभी यह पहला पड़ाव ही है। इसके आगे और भी रुकावटें हैं। असली दिक्कत यह है कि खेतों में फसलों का परीक्षण राज्य सरकारों की रजामंदी के बगैर शुरू नहीं हो सकता है और ज्यादातर राज्य जीन संवर्द्धित फसलों के परीक्षण के वास्ते तैयार नहीं दिख रहे हैं। बिजनेस स्टैंडर्ड के एक सर्वेक्षण में पता चला है कि ज्यादातर राज्य इन फसलों के परीक्षण की इजाजत नहीं देना चाहते और कुछ अन्य राज्य इसकी सशर्त अनुमति देने के पक्ष में हैं। कुछ राज्य ऐसे भी हैं, जो न तो इनकार कर रहे हैं और न ही इसके लिए हामी भर रहे हैं। वे चुनाव होने के बाद ही फैसला करना चाहते हैं। हालांकि सरकार के लिए राहत की बात यह है कि खेती-बाड़ी के लिहाज से दो बड़े राज्य महाराष्ट्र और पंजाब जीएम फसलों की प्रायोगिक खेती के लिए तैयार हैं। जीईएसी अधिकारियों ने बताया कि मक्का, सरसों और चावल सहित कुछ अन्य फसलों की प्रायोगिक खेती की अनुमति दी गई है, लेकिन जिन राज्यों में इनकी ज्यादा खेती होती है, वे प्रायोगिक परीक्षण के लिए तैयार ही नहीं हैं। हालांकि अधिकारी कह रहे हैं कि खाद्यान्न, सब्जियों और तिलहन की मांग लगातार बढ़ रही है और इन परिस्थितियों में जीएम फसलें बेहतर विकल्प साबित हो सकती हैं। अधिकारियों ने कहा कि इनसे उत्पादन में खासा इजाफा होगा। हालांकि इन फसलों के इस्तेमाल से स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं की आशंका जताई जा रही है। दूसरे देशों में भी इस तरह की आशंका जताई जा रही है। कुछ साल पहले भारत ने जीएम फसलों की प्रायोगिक खेती रोक दी थी। हालांकि पिछले सप्ताह जीईएसी से 11 फसलों को अनुमति मिलने के बाद इस मुद्दे ने एक बार फिर ध्यान आकर्षित किया है।

सीआईएफटी की तकनीक से महिलाएं आत्मनिर्भर

नई दिल्ली... केरल की सुनामी पीड़ित महिलाओं को मत्स्य प्रौद्योगिकी संस्थान की तकनीक से हुआ काफी फायदा सुनामी से पीड़ित महिलाएं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के केंद्रीय मत्स्य प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईएफटी) की तकनीक से न सिर्फ आत्मनिर्भर हो रही हैं, बल्कि अच्छी-खासी आमदनी भी कर रही हैं। सीआईएफटी के वैज्ञानिक राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना (एनएआईपी) के तहत महिलाओं को फिश मेड नाम से मछली उत्पाद तैयार करने की तकनीक सिखा रहे हैं, साथ ही सी-फ्रेश स्टालों के तहत ताजा मछली उत्पादों की बिक्री भी की जा रही है। सीआईएफटी की प्रधान वैज्ञानिक एवं सूक्ष्म जीव विज्ञान की प्रमुख डॉ.के.वी. ललिता ने बताया कि महिलाओं को मछली उत्पाद तैयार करने की तकनीक सिखाई जा रही है। फिश मेड के नाम से संस्थान में महिलाओं को करीब 28 उत्पाद फिश कोफ्ता बाल्स, फिश कटलेट, बर्गर पेटीज, फिश मंचूरियन, मोमोज तथा फिश समोसा आदि बनाने की तकनीक सिखाई जाती है। एक बैच में 20 महिलाओं को ट्रेनिंग दी जाती है तथा ट्रेनिंग के बाद संस्थान के आउटलेट पर नौकरी भी दी जाती है। उन्होंने बताया कि सीआईएफटी ने उत्पादों के विपणन के लिए केरल स्टेट कोऑपरेटिव फेडरेशन से भी अनुबंध किया हुआ है तथा फिश उत्पादों की बिक्री के लिए केरल में करीब 30 आउटलेट खोले हैं। फिश मेड के उत्पादों की बाजार में भारी मांग है तथा आगामी दिनों में आउटलेटों की संख्या को बढ़ाकर 100 करने की योजना है। सीआईएफटी पिछले दो साल यह योजना चला रहा है। सीआईएफटी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ नसीर ने बताया कि हमारा उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। फिश प्रोसेसिंग केंद्र में एनएआईपी के तहत महिलाओं को सी-फ्रेश की तकनीक सिखाई जाती है। सुनामी से उनको भारी आर्थिक नुकसान हुआ था लेकिन अब सीआईएफटी से ट्रेनिंग लेने के बाद उनकी जिंदगी न सिर्फ पटरी पर लौट आई है बल्कि उन्हें हर महीने पांच हजार रुपये से ज्यादा की आमदनी भी हो रही है। राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना (एनएआईपी) के सहयोग से मोटर बोट और मछली पकड? वाले जहाजों में प्रयोग होने वाले मरीन प्रोपेलर्स के उपयोग से औसतन 10 फीसदी डीजल की बचत हो रही है। इससे मोटर बोट और मछली पकड? वाले जहाज की स्पीड भी 10 से 15 फीसदी तक बढ़ जाती है। उन्होंने बताया कि यह कार्य उनका परिवार सदियों से कर रहा था लेकिन पिछले दो सालों से उन्होंने सीआईएफटी के वैज्ञानिकों की तकनीक को अपनाया है।

एफसीआई को गेहूं खरीद में टक्कर

पिछले साल की तरह इस साल भी भारतीय खाद्य निगम सहित सरकारी गेहूं खरीद एजेंसियों को निजी कारोबारियों से कड़ी टक्कर मिल सकती है। हालांकि गेहूं की खरीद 1 अप्रैल से शुरू होनी है, लेकिन पंजाब और हरियाणा में जल्दी बोई जाने वाली किस्मों की आवक शुरू होने से कीमतें नरम पड? लगी हैं। मध्य प्रदेश में 25 मार्च से खरीद शुरू हो गई है। सरकार ने इस सीजन में 3.1 करोड़ टन गेहूं खरीदने का फैसला लिया है, क्योंकि उत्पादन 9 करोड़ टन से ज्यादा होने का अनुमान है। केंद्रीय उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने राज्यों के खाद्य सचिवों के साथ 17 मार्च को हुई बैठक में खरीद लक्ष्य 3.1 करोड़ टन तय किया था, लेकिन यह देखना होगा कि यह लक्ष्य कितना पूरा होता है। आमतौर पर निजी कारोबारी उन राज्यों में खरीद करते हैं, जहां राज्य एजेंसियों की मजबूत पकड़ नहीं होती है। एक पुराने कारोबारी ने नाम न छापने का आग्रह करते हुए कहा कि पंजाब और हरियाणा जैसे मुख्य गेहूं उत्पादक राज्यों में खरीद की अच्छी व्यवस्था है, इसलिए वहां निजी कारोबारियों के हाथ नहीं पड़ेंगे। वे अपनी ज्यादातर खरीद उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और गुजरात से करेंगे। इस सीजन के लिए सीएसीपी (कृषि लागत एवं मूल्य आयोग) द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 1,400 रुपये प्रति क्विंटल तय किया गया है। निजी कारोबारियों को उत्तर प्रदेश का बाजार लुभाता है, क्योंकि वहां पर्याप्त बुनियादी ढांचा न होने के कारण कीमत एमएसपी से नीचे रहती है। गुजरात और महाराष्ट्र में निजी कारोबारियों की भागीदारी अहम होने की संभावना है, क्योंकि निर्यातकों ने गेहूं के वायदा सौदे किए हुए हैं। अहमदाबाद के एक ब्रोकर ने कहा कि सिंगापुर को निर्यात करने से उन्हें दाम 1,660 रुपये प्रति क्विंटल मिल रहे थे और घरेलू बाजार में कीमत 1,675 रुपये प्रति क्विंटल थी। गांधीधाम से सीमेंट की आवाजाही सुस्त पड? से ट्रकों की उपलब्धता पर असर पड़ा है और इससे मालभाड़े की लागत में बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने कहा कि आवक में सुधार से वे पहले से किए हुए निर्यात अनुबंधों को पूरा करने की कोशिश करेंगे। निजी कारोबारियों को कुछ गेहूं ऊंची कीमतों पर खरीदना पड़ सकता है

रुपये की मजबूती से कपास निर्यातक मुश्किल में

नई दिल्ली कम मार्जिन कपास के निर्यात सौदों में घट गया है मार्जिन ऐसे में निर्यात सौदे पहले की तुलना में घट गए हैं बढ़ेगी कीमत घरेलू बाजार में बढि?ा क्वालिटी की कपास की कीमतों में तेजी आने की संभावना डॉलर के मुकाबले रुपये में आई मजबूती से कपास निर्यात सौदों में मार्जिन कम हो गया है। भारतीय मुद्रा मजबूत होकर अब 61.19 रुपये प्रति डॉलर के स्तर पर पहुंच गई है। हालांकि विदेशी बाजार में कपास की कीमतों में भी इस दौरान हल्का सुधार आया है लेकिन घरेलू बाजार में बढि?ा क्वालिटी की कपास की आवक कम हो गई है। ऐसे में घरेलू बाजार में बढि?ा क्वालिटी की कपास की कीमतों में तेजी आने की संभावना है। कॉटन कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (सीसीआई) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने 'बिजनेस भास्कर' को बताया कि डॉलर के मुकाबले रुपये के मजबूत होने से कपास के निर्यातकों का मार्जिन कम हो गया है इसलिए निर्यात सौदे पहले की तुलना में कम हो गए हैं। चालू फसल सीजन 2013-14 (अक्टूबर से सितंबर) में अभी तक करीब 85 लाख गांठ (एक गांठ-170 किलो) कपास के निर्यात सौदों का रजिस्ट्रेशन हो चुका है तथा करीब 78 लाख गांठ की शिपमेंट भी हो चुकी है। हालांकि इस दौरान अंतरराष्ट्रीय बाजार में कपास के भाव 89.05 सेंट प्रति पाउंड से बढ़कर 91.5 सेंट प्रति पाउंड हो गया है। कपास की आवक चालू सीजन में अभी तक 8 फीसदी घटकर 247 लाख गांठ की हुई है जबकि पिछले साल की समान अवधि में 268 लाख गांठ की आवक हुई थी। नार्थ इंडिया कॉटन एसोसिएशन के अध्यक्ष राकेश राठी ने बताया कि निर्यातकों की मांग कम होने से उत्पादक मंडियों में महीनेभर में कपास की कीमतों में करीब 600 रुपये की गिरावट आकर शनिवार को अहमदाबाद में शंकर-6 किस्म का भाव 42,500-42,700 रुपये प्रति कैंडी (एक कैंडी-356 किलो) रह गया, जबकि फरवरी के आखिर में भाव 43,300 रुपये प्रति कैंडी था। उन्होंने बताया कि बढि?ा क्वालिटी की कपास की आवक कम हो रही है जबकि घरेलू मिलों की मांग अच्छी है। देशभर की मंडियों में इस समय दैनिक आवक लगभग 1.50 लाख गांठ की आवक हो रही है तथा होली की छुट्टियों के कारण अगले तीन-चार दिन दैनिक आवक में कमी आने की संभावना है। मुक्तसर कॉटन प्राइवेट लिमिटेड के डायरेक्टर नवनीत ग्रोवर ने बताया कि कॉटन यार्न में निर्यात मांग पहले की तुलना में कम हुई है जिससे घरेलू बाजार में कॉटन यार्न की कीमतें 235-240 रुपये प्रति किलो से घटकर 225 से 230 रुपये प्रति किलो रह गईं। उन्होंने बताया की बढि?ा क्वालिटी की कपास की कीमतें आगामी दिनों में बढने की संभावना है। कृषि मंत्रालय के दूसरे आरंभिक अनुमान के अनुसार वर्ष 2013-14 में कपास की पैदावार 356.02 लाख गांठ होने का अनुमान है, जबकि वर्ष 2012-13 में 342.20 लाख गांठ की पैदावार हुई थी

एफएमसी उपभोक्ता सुरक्षा के सुधार 1 मई से लागू करेगा

नई दिल्ली जिंस डेरिवेटिव्ज बाजार नियामक वायदा बाजार आयोग (एफएमसी) अपने अधीन आने वाले एक्सचेंजों को निर्देश दिया है कि उपभोक्ता सुरक्षा पर वित्तीय क्षेत्र विधायी सुधार आयोग (एफएसएलआरसी) द्वारा सुझाए गए सुधारों को लागू किया जाए। एफएसएलआरसी ने सदस्यों, अधिकृत व्यक्तियों और ग्राहकों के अधिकारी और दायित्वों में अहम बदलावों का सुझाव दिया है। एफएमसी ने एक्सचेंजों को आदेश दिया है कि ये सुझाव नए सदस्यों के लिए 1 मई से और वर्तमान सदस्यों के लिए 31 दिसंबर से लागू होंगे। पिछले साल दिसंबर में एफएमसी ने एक्सचेंजों और आम जनता से इस विषय पर राय मांगी थी। रोचक बात यह है कि एक्सचेंजों ने भी इन बदलावों का समर्थन किया था, लेकिन नियामक को आम जनता से कोई सुझाव नहीं मिले। नियामक ने सदस्यों को चेतावनी दी है कि ग्राहकों की उतनी ही सूचनाएं इक्ट्ठी की जाएं, जितनी वित्तीय लेन-देन के लिए जरूरी हों। सूचनाओं को समय पर अद्यतन करें और यह सुनिश्चित करें कि ग्राहक अपनी व्यक्तिगत सूचनाएं प्राप्त कर सकें। हालांकि संबंधित सदस्य ग्राहकों की सूचनाओं का उनकी स्वीकृति पर खुलासा कर सकते हैं। लेकिन ग्राहकों की व्यक्तिगत सूचनाओं की धोखाधड़ी, अनधिकृत लेन-देन और दावे आदि से सुरक्षा करने की जिम्मेदारी सदस्यों पर होगी। एफएमसी ने सदस्यों को आदेश दिया है कि शिकायत निवारण की व्यवस्था की जाए, जहां ग्राहक अपनी शिकायतें दर्ज करा सकें

उत्तर भारत में कम होगी बारिश : रिपोर्ट

नई दिल्ली .अल-नीनो का खतरा धीरे-धीरे बढ़ रहा है, जिससे आगामी मॉनसून सीजन के दौरान भारत के उत्तरी राज्यों में कम बारिश की ज्यादा आशंका है। स्काईमेट के संस्थापक और मुख्य कार्याधिकारी जतिन सिंह ने कहा, 'दक्षिण भारत के दोनों तरफ महासागर हैं। इसलिए चालू सीजन में इस क्षेत्र को या तो बंगाल की खाड़ी या अरब सागर या दोनों की मदद से पर्याप्त बारिश मिलेगी। दूसरी ओर उत्तर भारत पूरी तरह महासागर पर निर्भर है और यह तट पर स्थित नहीं है, इसलिए उत्तर भारत को इस सीजन में बारिश की कमी झेलनी पड़ सकती है।' स्काईमेट का दावा है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारत के मौसम पैटर्न के बारे में उसके पूर्वानुमान सबसे सटीक रहे हैं। पिछले 138 वर्षों के दौरान करीब 98 फीसदी अलनीनो की घटनाओं में सामान्य से कम बारिश हुई है और 60 फीसदी मामलों में सूखा रहा। इस दौरान अत्यधिक बारिश नहीं दर्ज की गई। अलनीनो की घटनाओं और इसके लिए लगाई गई मशीनों के बीच सांख्यिकी सह-संबंध रहा है। लेकिन समस्या यह है कि सिस्टम का आकार इतना बड़ा है कि कोई भी व्यक्ति वैज्ञानिक रूप से इन मशीनों की हर तरह से जांच नहीं कर सकता। इसका सिद्धांत यह है कि दक्षिण अमेरिका में गर्मी से बंगाल की खाड़ी की नमी उधर जा रही है, जिससे भारत के कुछ हिस्सों में कम बारिश होगी। सिंह ने कहा, 'पूरा सीजन 8-9 मिलीमीटर बारिश पर आधारित है। अगर हम भारत के सभी मौसम उपखंडों को अध्ययन में शामिल करें और 31 सितंबर 2014 तक 8-9 मिलीमीटर की 90-95 फीसदी बारिश होती है तो इसका वितरण कम हो सकता है।' वर्ष 2002 में अलनीनो सक्रिय था, जिस से बारिश सामान्य से 21 फीसदी कम रही.

कैसें करें बीजीय मसालों में पश्च कटाई प्रबन्धन, एवं मूल्य संवर्धन

राम गोपाल सामोता एवं डॉ0 बी.एल.जाट
कीट विज्ञान विभाग
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर (राज.)

राजस्थान में जीरा, धनियाँ, सौंफ व मेथी बडे पैमाने पर पैदा की जाती है। इन मसालों की गुणवत्ता अच्छी बनी रहे इसके लिए कटाई/तुडाई व भण्डारण में कुछ बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

गुणवत्ता बनाये रखने के लिए सावधानियाँः

बीजीय मसालों में फसल कटाई से लेकर कटाई उपरान्त अच्छे प्रबन्धन के निम्नलिखित कदम उठाये जाने चाहिएः

◆फसल कटाई की सही अवस्था, आकार, रंग, रेशों की मात्रा, वाष्पशील तेल, चबाने की गुणवत्ता (सौंफ), टूटने की प्रवृति (धनिया) आदि बीजीय मसालों की गुणवत्ता निर्धारित करते हैं।

◆सफाई के साथ सुखाने, धूल.मिट्टी, भूसा, पादप टुकडे, पक्षियों की बीट आदि को फटक. कर अलग करने के साथ ही स्वच्छ एवं वायु संचार वाले गोदाम अच्छे उत्पाद को सुनिश्चित करते हैं।

मसालों में क्योरिंगः

तुडाई के बाद मसालों को जिस स्वरूप में काम में लिया जाता है तथा इन्हें इनके परिरक्षित रूप तक लाने अथवा निर्मित करने की प्रक्रिया को क्योरिंग कहते हैं, या यों कहें कि इनकी गिली (नमी) वाली अवस्था से सूखी अवस्था तक लाने तथा इनको उपयोग में लाने वाले रूप तक तैयार करने की क्रिया को क्योरिंग कहते हैं ताकि इनका सुरक्षित भण्डारण किया जा सके।

क्योरिंग की आवश्यकताः

फसल की कटाई के समय मसालों को जिस अवस्था में प्राप्त किया जाता है, उन्हें उस रूप या स्थिति में अधिक दिनों तक संग्रहित नहीं किया जा सकता है। कटाई के समय अन्य फसलों की तरह ही मसालों में भी बहुत नमी (55–85 प्रतिशत) उपलब्ध रहती है। इसे 8–12 प्रतिशत तक लाना होता है अन्यथा ये भण्डारण मे खराब हो जाते हैं, इसलिए मसालों की क्योरिंग करने की आवश्यकता पडती है।

क्योरिंग के सिध्दान्तः

मसालों में क्योरिंग अपनाने के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता हैः

सही समय पर तुडाई करनाः

मसालों को अच्छी, पकी हुई अवस्था में सही समय पर काटने से इनमें रंग, चमक एवं खूशबू की गुणवत्ता उच्च श्रेणी की रहती है। उदाहरणार्थ, सौंफ को चबाने के लिए तुडाई कच्ची अवस्था में ही करते हैं जबकी अचार आदि अन्य प्रयोग के लिए परिपक्व होने पर कटाई करते हैं। धनियाँ में टूटने की प्रवृति के कारण इसके रंग में आधा हरा व आधा पीला होने की अवस्था में ही तुडाई कर लेनी चीहए।

◆नमी कम करके भणडारण क्षमता बढानाः तुडाई के समय की नमी को घटाकर 8–12 प्रतिशत लाना आवश्यक है ताकि मसालों का वर्षभर भण्डारण किया जा सके।

◆क्योरिंग द्वारा मसालों के मूल गुणों एवं विशेषताओं को संरक्षित रखा जाना– मसालों के मूल गुणों एवं विशेषताओं में इनकी सुगन्ध, सुवास, तीखापन एवं चरपराहट, रंग, स्वाद, रूप एवं चमक प्रमुख हैं। अतः तुडाई के बाद क्योरिंग एवं अन्य उपचारों द्वारा इन मूल गुणों को बेहतरीन बनाया जाकर संरक्षित किया जाता है।

◆सूक्ष्म जैविक प्रक्रियाओं पर नियन्त्रण कर मसालों को रोगाणु रहित बनाना– तुडाई के बाद मसालों के भण्डारण के दौरान सूक्ष्म जैविक प्रक्रियाओं के दौरान के अन्तर्गत इन्हें जीवाणु, खमीर, फफूँद एवं भोज्य रोगाणु आदि खराब कर सकते हैं। मसालों में नमी की अधिकता जीवाणु एवं फफूँद की वृद्धि का कारण बनती हैं। इनका प्रकोप रंग एवं महक में परिवर्तन कर सकता है।

बीजीय मसालों में मूल्य संवर्धन : कृषि–निर्यात में मसाला फसलों की बहुत बडी हिस्सेदारी है, इसलिए हमारी अर्थव्यवस्था में इन फसलों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

मूल्य– सवंर्धित उत्पादन शब्द से सामान्यतः यह संकेत मिलता है कि प्रति इकाई उत्पाद मात्रा के प्रसंस्काण, पैकेजिंग या अन्य तरीकों द्वारा गुणवत्ता में सुधार किया जाकर कीमत में उल्लेखनीय वृद्धि होना।

◆मसाला सत्व– साबुत एवं पिसे हुए मसालों का विकल्प है। उत्पादों को तरल रूप में सुगंध, सुवास एवं रंग की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु रूपान्तरित किया जाता है।

◆पिसा हुआ मसाला– विभिन्न स्तर तक मसालों को पीसा जाता है यथा टुकडों में, मोटे पिसे हुए, महीन पिसे हुए इत्यादि। पिसाई की क्रिया के दौरान ताप बढने के कारण कुछ सुगन्ध नष्ट हो जाती है। इससे बचने के लिए मसालों को कम तापमान पर तरल नत्रजन के साथ पीसा जाता है। इससे इनमें सुगन्ध, सुवास, रंग अच्छी तरह बने रहते हैं एवं नमी का कम ह्रास होता है।

◆उपभोक्ता पैक्ड मसाले– मसालों की उपयोग अवधि बढाने के लिए पैकेजिंग का महत्व उल्लेखनीय रूप से बढ गया है। प्रचलित पैकेजिंग में ग्लास, बोतल, कडे प्लास्टिक बर्तन, धात्विक वाहक एवं लचीले एल्युमिनियम फोइल पाउच काम में लिए जाते हैं। उपभोक्ता पैक्ड मसालों के निर्यात से प्रति इकाई मात्रा में अधिक मूल्य अर्जित किया जा सकता है।

◆जैविक मसाले– जैविक खेती से उत्पादित मसालों को भी मूल्य सवंर्धित उत्पाद समझा जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में इनकी अच्छी कीमत प्राप्त होती है। परम्परागत खेती से उत्पादित मसालों की तुलना में इनकी कीमत 20 से 50 प्रतिशत अधिक मिलती है। जैविक खेती से मसालों की खेती के लिए कृषकों के समूहों को तैयार करने के लिए मसाला बोर्ड के द्वारा भी वित्तीय सहायता जारी की जाती है।

गेंदा (हजारा) की व्यवसायिक खेती

प्रकाश महला
(उद्यान विभाग)
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर

सम्पूर्ण देश में गेंदा (हजारा) की वैज्ञानिक खेती सरलता पूर्वक साल भर की जा सकती है, विशेषतः वर्षा ऋतु में जब फूल दशहरा व दीपावली के अवसर पर उपलब्ध हो सके। यह फूल गुलाब के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसे कोई भी सामाजिक कार्यक्रम क्यो न हो उनमें विभिन्न रूपों जैसे माला, झालर, वेणी, पूजा हेतु, विवाहोत्सव एवं अन्य कई सजावट के कार्यों में उपयोग किया जाता है। इसके फूल अधिक समय तक टिकाऊ बने रहते है। फ्रेन्च गेंदा अपने बौनेपन एवं अधिक फूल के कारण राकरी लटकन टोकरी, तथा बेडिंग बाकसेस के लिये उपयुक्त है। इन्हीं गुणों के कारण गृहवाटिका तथा पुष्प खेती का यह एक प्रमुख फूल माना जाता है। यह दो प्रकार के होते है।

1.आफीकन गेंदा
2.फ्रेन्च गेंदा (गेंदी)

प्रजातियां

आफ्रीकन गेंदा :– इसके पौधे अधिक ऊँचे, कद में बड़े, आकर्षक पुष्प वाले होते है। फूल पीले, नारंगी एवं नारंगी पीले आदि होते है। इनकी प्रमुख प्रजातियां जोइन्ट डबललून, गोल्डन एज, काइसेचिन्यमम चार्म, काउन ऑफ गोल्ड, स्पन गोल्ड इत्यादि।

फ्रेन्च गेंदा :– इनके पौधे अधिकतर बौने कद व छोटे पुष्प लिये अधिक संख्या में आते हैं जिससे पूरा पौधा भर जाता है। पुष्प पीले, नारंगी, सुनहरी लाल एवं मिले–जुले रंग के भी होते हैं। इनकी प्रमुख प्रजातियां रेड ब्रोकाड़े, स्स्टी रेड, बटरस्काच, वेलेन्सिया, सुसाना, जिप्सी, लेमनड्राप, स्प्रे, फूलेमिंग फायर डबल, स्टार ऑफ इंडिया, फायर ग्लो, पिटाइटस आदि है।

भूमि :– गेंदा को विभिन्न प्रकार की भूमि में लगाया जा सकता है। परन्तु उपजाऊ गहरी व भुरभुरी भूमि जिसमें जल धारण के साथ ही जल निकास की क्षमता हो, अधिक उपयुक्त होती है।

बीज की मात्रा :– करीब 1–1.5 किलो ग्राम प्रति हैक्टर

बुवाई का समय :– बीज को फरवरी–मार्च एवं मई–जून, अगस्त से अक्टूबर में बोया जा सकता है।

उर्वरक की मात्रा :– गेंदा की प्रजाति जाइण्ट डबल अफ्रीकन नारंगी की अधिकतम उपज हेतु 100 किलो फॉस्फोरस एवं 100 किलो पोटाश प्रति हैक्टेयर खेत की तैयारी के समय आधार रूप में मिलाएं तथा शेष 100 किलोग्राम नत्रजन पौधे रोपण के एक माह बाद डालें।

लगाने का तरीका :– करीब 4 से 6 सप्ताह में पौधे रोपण हेतु तैयार हो जाते है। अफ्रीकन गेदें की प्रजाति जाइंट डबल अफ्रीकन नारंगी को 40 ग 30 सेंटीमीटर कतार से कतार तथा पौधा से पौधा दूरी पर तथा फ्रेन्च गेंदा की प्रजाति रेड ब्रोकोडे को 20 ग 10 सेंटीमीटर कतार से कतार तथा पौधा से पौधा दूरी पर लगाने से अधिक उपज प्राप्त हुई।

सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई :– गेंदा को अपेक्षाकृत पानी की कम आवश्यकता होती है। अतः जब–जब भी आवश्यकता हो सिंचाई करें। समय–समय पर आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करें, जिससे फसल पर कोई विपरीत असर न हो।

अन्य कार्य :– पौध रोपण के 40 दिन बाद पिचिंग करने से पौधों में शाखायें जल्दी बनती है, जिससे एक समान आकार के अच्छी गुणवत्ता वाले फूल प्राप्त होते है। इसके अतिरिक्त उपज भी अधिक प्राप्त होती है।

फूलों की तुड़ाई :– खिले हुये फूलों को प्रातः काल या सायंकाल ठण्डे समय तोड़ना चाहिये। फूलों की तुड़ाई लगातार समय पर करना चाहिये तथा फूलों को निकालते रहना चाहिये जिससे सतत फूल खिलते व मिलते रहें।

पैदावार :– फूलों की पैदावार लगाने के मौसम तथा कृषि कार्य पर निर्भर करती है। प्रयोगों से प्राप्त परिणामों के आधार पर इसकी उपज खरीफ में 200 से 250 क्विंटल प्रति हैक्टेयर, रबी में 150–175 क्विं./है. एवं ग्रीष्म काल में 100–120 क्विंटल/हैक्टेयर औसतन प्राप्त हुई है।

पौध संरक्षण :– गेंदा में तुलनात्मक रूप में कीट व्याधि का प्रकोप बहुत ही कम होता है। परन्तु कभी–कभी प्रकोप देखने को मिलता है।

कीड़े

रेड स्पाईडर माइट :– इनका आक्रमण फूलों के खिलने के समय होता है।

रोकथाम :– डाइमिथोएट या ऑक्सी डिमेटोन मिथाइल 25 ई.सी. या नुवाक्रान 40 ई.सी. की एक मिली लीटर मात्रा/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

हेयरीकेटरपीलरः– यह पौधे को खाकर क्षति पहुँचाते है।

रोकथाम :– इण्डोसल्फान 35 ई.सी. की मिली लीटर मात्रा को 1 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

व्याधियाँ

आर्द्रगलन (डेम्पिंग–ऑफ) :– यह व्याधि पौध शाला में छोटे–छोटे पौधों को अधिक क्षति पहुँचाती है।

रोकथाम :– पौध शाला में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।

लीफस्पाट एवं ब्लाइट :– नीचे की पत्तियों पर छोटे–छोटे गोल भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं, जो बाद में सम्पूर्ण पौधे को क्षति पहुंचाते है।

रोकथाम :– मैंकोजेब की 0.25 प्रतिशत मात्रा का 15 दिन के अन्तर से छिड़काव करें।

जैव विविधता और आर्थिक मूल्यः एक परिपेक्ष्य

विकास पावडिया, विनोद कुमार और सुनिता
विकास पावडिया– शोध विद्यार्थी, कृषि अर्थशास्त विभाग एस.के. एन. कृषि महाविद्यालय जोबनेर जयपुर
विनोद कुमार – शोध विद्यार्थी, पादप प्रजनन एंव अनुवांशिकी विभाग एस.के.एन. कृषि महाविद्यालय जोबनेर जयपुर
सुनिता – शोध विद्यार्थी, पादप प्रजनन एंव अनुवांशिकी विभाग, एस.के.एन. कृषि महाविद्यालय जोबनेर जयपुर

जीवन की विविधता पृथ्वी पर मानव के अस्तित्व और स्थायित्व को मजबुती प्रदान करती है। समृद्व जैव विविधता अच्छा स्वास्थ्य, खाध्य सुरक्षा, आर्थिक विकास, आजीविका सुरक्षा और जलवायु की परिस्थितियों को सामान्य बनाये रखने का आधार है। भारत एक प्राकृतिक संपन्न देश हैं और प्राचीनकाल से ही भारत प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूक एवं प्रतिबद्व रहा है। जैव विविधता प्राकृतिक संसाधनो का एक प्रमुख अंग है। पृथ्वी पर मानव, वनस्पतियों तथा सभी जीवों के समुच्चय वैविध्य को जैव विविधता के नाम से जाना जाता है। पृथ्वी पर जैविक स्त्रोत मानव के आर्थिक एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

जैव विविधता का महत्व

जैव विविधता पृथ्वी की प्राकृतिक जैव सभ्यता है। यह मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति का मूल स्त्रोत होने के साथ साथ इस ग्रह की उत्तरजीविता के लिए भी अनिवार्य है। जैव विविधता अपने आप में एक जीवन बीमा के समान है। विश्व में जैव विविधता का वार्षिक योगदान लगभग 330 खरब डॉलर है।

जैव विविधता :– ह्रास एवं संरक्षण

भारत जैव विविधता और इससे सम्बन्धित न केवल पारम्परिक ज्ञान से सम्पन्न है बल्कि हमारा देश जैंव विविधता के संरक्षण के प्रति जागरूकता मे महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा रहा है। फिर भी जैव विविधता के संरक्षण मे आभी लापरवाही को देखते हुए इस परिपेक्ष्य में समय दर समय सम्मेलन आयेजित किये जाते है और इन सम्मेलनों का मुख्य लक्ष्य जैव विविधता का संरक्षण रखा जाता है। विश्व मे जैव विविधता के धरोहर मे अग्रणी रहते हुए भी भारत में प्रतिदिन जैव विधिता मे मूल्य ह्रास होता जा रहा है। एवं संकटग्रस्त प्रजातियों की संरक्षण के वृद्वि होती जा रही हैं चूंकि जैव विविधता किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास को स्थायत्वि प्रदान करती है अतः अर्थशास्त्र की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्यांकि विज्ञान आधारित गहन कृषि आधारित विकासशील देश जिसमें भारत जैसे कम भूमि वाले देश शामिल है पर्यावरण स्थिरता का ह्रास किये बिना उत्पादकता वृद्वि ही उत्पदान बढ़ाने की एकमात्र उम्मीद है। संसाधनों का दोहन मुख्यत संसाधनों का ह्रास घटते हुए जल स्तर बढता हुआ मनुष्य (भूमि अनुपात का ह्रास), प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता में कमी (0.14 हैक्टेयर 2000 ए.डी.), 0.10 हैक्टैयर (2025 ए.डी.) शहरीकरण, औधोगीकरण, मनुष्यो की आवश्यकता बढती हुयी कार्बन उपघटन की माँग इत्यादि। इसमें कोई शक नही है कि अगर चीन 94 मिलियन हैक्टेयर बुवाई क्षेत्र से 500 मैट्रिक खाद्यान्न उत्पादन कर सकता है तो भार 66 मिलियन हैक्टेयर सकल सिचिंत क्षेत्र सहित 142.5 मिलियन हैक्टेयर कुल फसली क्षेत्र से सदी के अगले तिमाही मे वर्तमान स्तर से दोगुना उत्पादन कर सकता है। घटती हुयी भमि उपलब्धता प्रति मनुष्य एवं बढती हुयी मानव जनसंख्या आज के वक्त अर्थशास्त्रियों के लिए एक अतिआवश्यक बिन्दु है जो कि उनको बढती हुयी जनसंख्या के भोजन उपलब्धता एवं उनके जीवन के समुचित विकास का विस्तृत उल्लेख करता है। साथ ही देश की विकास दर, विभिन्न उद्योंगो के लिए पर्यावरणीय एवं उत्पादन हीनता, कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्र की उत्पादन घटोतरी बहुत ज्यादा प्रभावित होती है

जैव विविधता ह्रास के तत्व

जैव विविधता के खतरें में मुख्यतः विकास का दबाव, अतिक्रमण, शोषण, मानव प्रेरित आपदाऐ, मानव संसाधन का प्रबंधन एवं राजनीति और नीति के मुददे शामिल है। इनमे विकास का दबाव मुख्यतः निर्माण, वन आधारित उद्योग, सिचाई परियोजनाऐं, खनन, तेल ड्रिलिंग, संसाधन निष्कर्षण तथा सड़क और परिवहन आदि हैं।

जैव विविधता का आर्थिक मूल्य बहुत है पर आज हो रहे जलवायु परिवर्तन, विकास के कारण खत्म हो रही है और आज वही एक वैश्विक मुददा बन गया है।

आर्थिक मूल्य और प्राकृतिक पूंजी

जीव विज्ञानियों ने अग्रणी वैश्विक अर्थशास्त्रियों के साथ निर्धारित करने के लिए सहयोग शुरू किया है कि प्रकृति की संपदा और सेवाओं को कैसे मापा जाए और इन वैश्विक बाजार लेन देन मे इन मूल्यो को स्पष्ट किया जाए। इस लेखा प्रणाली को प्राकृतिक पूंजी कहा जाता है।

निहित प्राकृतिक अर्थव्यवस्था मानवता को बनाये रखने मे आवश्यक भूमिका निभाता है। जिसमे वैश्विक परिवेशीय, रसायन, परागण फसल, कीट नियंत्रण, मिट्टी के पौषक तत्वो का आवर्तन, हमारी जल आपूर्ति का शुद्विकरण, दवाओं की आपूर्ति, स्वास्थ्य लाभ और जीवन सुधार की अपरिभाषित गुणवता शामिल है। बाजार तथा प्राकृतिक पूंजी और सामाजिक आय असमानता और जैव विविधता हानि के बीच एक रिस्ता सहसंबंध मोजुद है इसका मतलब यह है कि जहां संम्पत्ति की अधिक असमानता है उन स्थानों में जैव विविधता क्षति की दरें भी अधिक है।

हांलाकि प्राकृतिक पूंजी की प्रत्यक्ष बाजार तुलना मानव दृष्टि से अपर्याप्त होने की संभावना है, परिस्थितिक तंत्र सेवाओ का एक माप योगदान की मात्रा को वार्षिक तौर पर अरबों डॉलरों मे होने का संकेत देता है उदाहरणार्थ उत्तरी अमेरिका के जंगलों के एक खंड का वार्षिक मूल्य 250 बिलियन डॉलर निर्धारित किया गया है, एक और उदाहरण में, मधुमक्खी परागण से प्रति वर्ष 10 से 18 बिलियन डॉलरो के बीच मूल्य होने का अनुमान है।

मानव समाज की मांग पृथ्वी की जैव पुनर्योजी क्षमता से अधिक होने कारण ग्रहो की यह समृद्वि अविश्वसनीय दर पर खोती जा रही है। जबकि जैव विविधता और परिस्थितिकी प्रणालियां लचीली है, उन्हे खोने का खतरा है कि मानव प्रोद्योगिकीय नवाचार के माध्यम से कई परिस्थितिकी तंत्र के कार्यो की पूनर्रचना नहीं कर सकते है।

सांराश

अतः जैव विविधता के महत्व को देखते हुए उसका आर्थिक तथा प्राकृतिक मूल्य एक अत्यन्त ज्वतिल समस्या है और उसके सही पैमाने को समझना वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण तक्ष्य है जो आज की बढती हुयी जनसंख्या को भोजन उपलब्धता तथा प्राकृतिक संसाधनों के सही संरक्षण को चुनौंती देता है।

किसानों को फलपीक बीमा योजना में भाग लेना चाहिए।

पत्रव्यवहार हेतु पत्ता :
विनय कुमार आवटे
बी-23 मंत्री किशोर पार्क,
अधिक्षक कृषि अधिकारी
भोसले नगर, पुणे - 411 007.
पुणे विभाग, पुणे.

जागतिक हवामान में बदलाव के कारण कृषी क्षेत्र के सामने अनेक चुनौतियां खड़ी हो रही है। इस साल का मौसम काफी खराब साबित हुआ जबकी इस साल महाराष्ट्र में काफी अच्छी बारिश के चलते हुए अन्नधान्य एवं अन्न कृषि उत्पादन अच्छे आने की काफी संभावना भी किसानों ने रबी हंगाम में हरभरा, गेंहुँ, जैसे फसलोका अधिक उत्पादन लेने की पूरी तैयारियां कि थी इसके साथ झाड डाळींब (अनार), पपया, केळी जैसे फलपील साथ कांदा, बैंगन, डमाटर एवं अन्य सब्जियां की भी काफी मात्रा में लागत की हुई थी।

मात्र फरवरी 2014 अनिष्टकारी महीना साबित हुआ। महाराष्ट्र में मराठवाडा, खान्देश, विदर्भ एवं पश्चिम महाराष्ट्र में काफी मात्रा मे बर्फ गिरने से फसलो का काफी नुकसान हुआ शासन की तरफसे पंचनामे हो रहे है। लगभग 19-20 लाख हेक्टर तक क्षेत्र प्रमाणित हुआ है। जबकी रब्बी हंगाम में राज्य में कुल 60-60 लाख हेक्टर क्षेत्र भारी मात्रा में बर्फ गिरने से प्रभावित हुआ है।

नासिक जो कि द्राक्ष का आगार माना जाता है। जहाँ से सबसे अधिक मात्रा में निर्यातक्षम द्राक्ष का उत्पादन किया जाता है। वो भाग भी काफी प्रभावित होने के कारण किसानों का भारी नुकसान हुआ है। महाराष्ट्र शासन ने नासिक जिल्हे में द्राश्र के लिए फलपीक बीमा योजना लागु की भी जिसमें विशेष तौर से बर्फ के कारण हुए नुकसान में भी किसानों को मुआवजा मिलने की तरकीब रखी थी।

इस बीमा योजना में 1 जनवरी 2014 से 31 मार्च 2014 के दरम्यान बर्फवृष्टी से द्राक्ष का नुकसान होता है तो किसानों को रु. 50,000/- प्रति हेक्टर कि सहायता देने का प्रावधान था जबकी बीमा हप्ता रु. 6,000/- प्रति हेक्टर था। जिसमें शासन से 50% याने की रु. 3,000/- प्रति हेक्टर कि सबसिडी थी और किसानों कों केवल रु. 3,000/- प्रति हेक्टर प्रिमियम भरके इसमें हिस्सा लेना था। मगर किसानों ने बर्फ की संभावना न करते हुउ इस बीमा योजनामें भाग नहीं लिया। जबकी फरवरी में बर्फ गिरने के कारण उनका भी नुकसान उठाना पड रहा है। अगर किसान इस द्राक्ष पीक बीमा योजना में सहभाग लेते तो इस आपत्ती में उनको अच्छी सहायता मिलती.

इसलिए किसानों के अभी ये जरुरी है कि वो अपने फलाविक अन्य कृषि उत्पादनों को बीमा योजना द्वारा संरक्षित करे और नुकसान की स्थिती में अच्छी सहायता पाये।

बकरी पालन का एक लाभकारी पहलू ...

भारत की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में बकरी जैसा छोटे आकार का पशु भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विगत 2-3 दषकों में ऊंची वार्षिक वध दर के बावजूद विकासषील देषों में बकरियों की संख्या में निरंतर वृध्दि, इनके सामाजिक और आर्थिक महत्व का दर्षाती है। प्राकृतिक रूप से निम्न कारक बकरी विकास दर को बढ़ाने में सहायक सिध्द हो रहे हैं।

ै बकरी का मानव व पशु प्रजातियों के अयोग्य खाद्य पदार्थों को उच्च कोटि के पोषक पदार्थों (मांस, दूध) और अन्य उत्पादों / उपत्पादों (रेषा, बाल, खाल) में परिवर्तित करने की क्षमता रखना।

बकरी पालन का एक लाभकारी पहलू यह भी है कि इसे बच्चे व महिलाएं आसानी से पाल सकते हैं। वर्तमान में बकरी व्यवसाय की लोकप्रियता तथा सफलता की अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि देष के विभिन्न प्रान्तों में इसका व्यवसायीकरण हो रहा है। औद्यौगिक घराने और व्यवसायी बकरी पालन पर प्रषिक्षण प्राप्त आगे रहे हैं और बड़े-बड़े बकरी फार्म सफलतापूर्वक चल रहे हैं।

ै बकरी का विभिन्न जपवायु क्षेत्रों में अपने को ढालने की क्षमता रखना। इसी गुण के कारण बकरियां देष के विभिन्न भौगोलिक भू-भागों में पाई जाती हैं।

ै बकरी की अनेक नस्लों का एक से अधिक बच्चे की क्षमता रखना।

ै बकरी की व्याने के उपरांत अन्य पशु प्रजातियों की तुलना में पुनः जनन के लिए जल्दी तैयार हो जाना।

ै बकरी मांस का समाज में सभी वर्गों द्वारा बिना किसी धार्मिक बंधन के उपयोग किया जाना।

ै बकरी उत्पादों की बढ़ती मांग और षीघ्र विपणन।

वर्तमान परिस्थितियों में कृषि योग्य भूमि कम होती जा रही है और चारागाह सिकुड़ रहे हैं। ऐसे में बड़े पालतू पशुओं का पालन ज्यादा मुनाफं का व्यवसाय नहीं है। अतः बकरी जैसा छोटा पशु इस कसौटी पर खरा उतरता है। बकरी पालन का एक लाभकारी पहलू यह भी है कि इसे बच्चे व महिलाएं भी आसानी से पाल सकते हैं। वर्तमान में बकरी व्यवसाय की लोकप्रियता तथा सफलता का अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि देष के विभिन्न प्रांतों में इसका व्यवसायीकरण हो रहा है। औद्यौगिक घराने और व्यवसायी बकरी पालन पर प्रषिक्षण प्राप्त आगे रहे हैं और बड़े-बड़े बकरी फार्म सफलतापूर्वक चल रहे हैं।

बकरियों के प्रजनन के लिए सबसे उपयुक्त समय मई के दूसरे सप्ताह से जुलाई तक होता है। ये बकरियां अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से दिसम्बर की प्रथम सप्ताह तक बच्चा दे देती हैं। इसी तरह नवम्बर व दिसम्बर का मौसम प्रजनन के लिए अनुकूल है। इस मौसम में गर्भधारण करने वाली बकरियां मार्च-अप्रैल तक बच्चा दे देती हैं।

किसी भी पशु उत्पादन आधारित व्यवसाय की सफलता पशु की क्षमता से जुड़े जनन चक्र की नियमितता और सततता पर निर्भर करती है। अतः जनन चक्र का अपना कर पशु की जनन क्षमता में कई गुना वृध्दि की जा सकती है। भारतीय नस्लु की बकरियों के जनन अभिलक्षणों में विभेद होने के कारण इनकी जनन क्षमता में समानता नहीं है। सम्पूर्ण जनन को अगर एक चक्र से रूप में माने तो इससे जुड़ी प्रक्रियाओं को मुख्यरूप से चार चरणों में बांटा जा सकता है जो एक-दूसरे से जुड़ी हैं। इन्हीं प्रक्रियाओं का वर्णन प्रस्तुत आलेख में किया गया है।

बात प्रजनन की

जनन चक्र के प्रथम चरण का आरम्भ बकरी के प्रजनन से होता है उत्ताम प्रजनन ही सफल बकरी पालन की कुंजी है। प्रत्येक नस्लु की बकरी एक निष्चित उम्र तथा षारीरिक भार (लैंगिक परिपक्वता) प्राप्त करने के बाद ही गर्भधान के योग्य होती है। अन्य पशु प्रजातियों की भांति बकरियों की प्रजनन क्षमता उम्र बढ़ने की साथ बढ़ती है। यहां 2-5 वर्ष की आयु अधिकतम होती है। बकरियों में प्रजनन की क्षमता सात वर्ष की आयु तक बनी रहती है। इसके बाद इसमे कमी आने लगती है। बकरी 10 वर्ष की आयु तक बच्चे देने में सक्षम है परन्तु अधिकांष बकरी पालक इन्हे 7-8 वर्ष की आयु के बाद अपने रेवड़ से हटा देते हैं। नर बकरे 2-6 वर्ष की उम्र तक गर्भधान करने योग्य बने रहते हैं। दूध देने वाली बकरी की नस्लों में प्रति ब्यांत बच्चे देने की दर मांस के लिए पाली जा रही बकरियों की तुलना में कम होती है। भारतीय नस्लु की बकरियां लगभग पूरे वर्ष ही ऋतु (गर्मी) में आती रहती हैं, हालांकि इसकी आवृति घटती-बढ़ती रहती है। रेवड़ की स्वस्थ बकरियां गर्भ न ठहरने पर 17-21 दिन के अंतराल पर नियमित ऋतु चक्र (मदचक्र) में आती रहती हैं। इसके फलस्वरूप् प्रजनन प्रक्रिया वर्ष भर चलती रहती है। यह प्रभावी पशु प्रबंध व आर्थिक दृष्टि से व्यवहारिक नहीं है। बकरी पालक पालक प्रजनन को इस प्रकार सामायोजित करें कि नवजात मेमनों के स्वास्थ्य के लिए मौसम अनुकूल रहे, चारा संसाधनों की उपलब्धता बनी रहे, जिससे आगे चलकर बिक्री के लिए बाजार मांग की पूर्ति होती रहे। बकरियां 24-28 घंटे तक गर्मी (मदकाल) में रहती हैं तथा इसी सीमित अवधि में बकरे को समागम का अवसर देती हैं। इस अवधि में गर्भाधान (नैसर्गिक या कृत्रिम) कराने पर वह गर्भित होती हैं। मदकाल में आई बकरियों का पता करने के लिए बकरी पालक 50-60 बकरियों का समूह में एक टीजर बकरा सुबह-षाम आधा-आधा घंटा घुमाएं। मदकाल में आई बकरियों में निम्न लक्ष्ण स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं।

ै अधिक उत्तोजना, दाना-पानी कम खाना व मिमयाना।

ै बार-बार पेषाव करना व तेजी से पूंछ हिलाना।

ै झुंड की दूसरी बकरियों पर आरोहरण (चढ़ना) तथा दूसरी बकरियों को अपने ऊपर आरोहरण करने देना।

ै योनि में सूजन तथा योनि मार्ग से थोड़ी मात्रा में पारदर्षी तोड़ गिरना, जो कभी-कभी पूंछ पर लगा भी देखा जा सकता है।

ै दूधारू बकरियों में दूध की मात्रा में कमी होना।

प्रसव पीड़ा आरम्भ में हलकी व बाद मे तीव्र होने लगती है। यह सभी लक्षण इस बात का संकेत हैं कि बकरी षीघ्र ब्याने वाली है। आमतौर पर प्रसव वेदना षुरू होने के 3-4 घंटे में बकरी बच्चे को जन्म दे देती है। पहली बार ब्याने वाली बकरी कुछ ज्यादा समय लेती है। बच्चा निकलने से पहले एक झिल्लीनुमा चमकीला गुब्बारा निकलता है। अधिकतर बकरियां लेटकर बच्चा देती हैं।

यह आवष्यक नहीं कि उपरोक्त सभी लक्षण एक साथ प्रकट हों। दो-तीन लक्षणों के आधार पर भी ऋतुमयी बकरियों को पहचाना जा सकता है। प्रजनन से 15-20 दिन पहले से अगर बकरियों के दाने की मात्रा 250-500 ग्राम प्रतिदिन के हिसाब से बढ़ा दी जाए तो इसका प्रजनन प्रतिषत तथा गर्भधारण की दर पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। फलस्वरूप प्रति ब्यांत अधिक बच्चे पैदा होते हैं। ऋतु में आई बकरी का सामयिक प्रजनन भी उतना जरूरी है, जितना कि ऋतुमयी बकरियों की पहचान। ऋतु में आई प्रत्येक बकरी को ऋतु (गर्मी) के लक्षण प्रकट करने के 10-12 घंटे बाद पहली बार उत्ताम नस्लु के बीजू बकरे से या कृत्रिम गर्भाधान विधि से गाभिन कराएं। अगर बकरी 24 घंटे बाद भी गर्मी में रहती है तो उसे पुनः 10-12 घंटे के अंतराल पर उसी बकरे से गाभिन कराए। बकरियों के प्रजनन के लिए सबसे उपयुक्त समय मई के दूसरे सप्ताह से जुलाई तक होता है। ये बकरियां अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से दिसम्बर की प्रथम सप्ताह तक बच्चा दे देती हैं। इसी तरह नवम्बर व दिसम्बर का मौसम प्रजनन के लिए अनुकूल है। इस मौसम में गर्भधारण करने वाली बकरियां मार्च-अप्रैल तक बच्चा दे देती हैं। इस प्रकार एक वर्ष में दो बार बकरियों का गाभिन कराने पर करीब 60-75 प्रतिषत बकरियां बच्चा देती हैं।

भारतीय नस्लु की बकरियों के जनन अभिलक्षणों में विभेद होने के कारण इनकी जनन क्षमता में समानता नहीं है। सम्पूर्ण जनन को अगर एक चक्र से रूप में माने तो इससे जुड़ी प्रक्रियाओं को मुख्यरूप से चार चरणों में बांटा जा सकता है जो एक-दूसरे से जुड़ी हैं। इन्हीं प्रक्रियाओं का वर्णन प्रस्तुत आलेख में किया गया है।

गर्भ निदान के अभाव में बकरियों को गर्भावस्था में उचित आहार और पौष्टिक आहार नहीं मिल पाता है जो गर्भपाता की संभावना को बढ़ा देता है और कमजोर बच्चे पैदा होते हैं। इसके साथ-साथ खाली (गैर गाभिन) बकरियों के रखरखाव पर अनावष्यक खर्ची करना पड़ता है तथा समय रहते पुनः गर्भधान न कराने से बकरी पालन व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं मिलता है।

चार आंखों वाली मछली

प्रकृति ने वाकई एक से एक हैरान कर देने वाले जीवों को बनाया है। ये जीव अपनी खासियत से सबको हैरान कर देते हैं।

हम यहां बात कर रहे हैं एक ऐसी ही मछली के बारे में जिसकी एक या दो नहीं बल्कि चार आंखें हैं और वो किसी शीशे सी पारदर्शी है।

हम बात कर रहें है ग्रासहेड बारलें फिश के बारे में जो समुद्र में ८०० से १००० मीटर के अंदर रहती है। आमतौर पर किसी भी मछली के दोनों तरफ एक आंख होती है। लेकिन ग्रासहेड मछली के दोनों तरफ दो बड़ी और चमकीली आंखें होती हैं।

यह मछली द.अफ्रीका के केपटाउन के नजदीक स्थित पूर्वी अटलांटिक महासागर में पाई गई हैं। ये मछलियां ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच सागर में भी मिलती हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि गहरे पानी में रहने वाली ये चार आंखों वाली मछलियां अपनी आंखों से एक ही बार में चार जगह देख सकती हैं।

सामने की दो आंखों से ये मछलियां अपने आगे के शिकार का पीछा करती हैं। जबकि पीछे की दो आंखों से वो अपने बगल में चल रही गतिविधियों और पानी में और नीचे चल रहे चीजों को एक साथ देख सकती हैं।

अप्रैल माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- गाय व भैंस के ताव में आने पर समय से गाभिन करवायें।
- पशुओं को बरसीम अधिक खिलाने से आफारा हो जाये तो पशु को 50 से 100 मि. लि. तारपीन के तेल में आधा किलो सरसों का तेल मिला कर दें।
- पशु को तेज धूप से बचायें।
- पशुओं को मुहँ–खुर रोग का टीका यदि नहीं लगवाया तो अवश्य लगवायें।
- दूध का अधिक मूल्य लेने के लिए दुग्ध पदार्थ बना कर बेचें।
- गेहूँ के भूसे की पौषकत्ता बढ़ाने के लिए यूरिया से उपचारित करें।
- पशु की अच्छी सेहत तथा दूध बढ़ाने के लिए 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण अवश्य दें।
- गर्मियों में हरा चारा लेने के लिए गेहूँ की कटाई के बाद ज्वार और मक्का व लोबिया की बिजाई करें।
- भेड़ बकरियों को अन्तः परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार समय–2 पर दें।

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का

नाम:.....

संस्था का

नाम:.....

पूरा पता:.....

ग्राम :.....तहसील :.....

जिला:.....राज्य:.....पिन कोड

दूरभाष कार्य:.....निवास:.....

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 ☐ तीन वर्ष :351 ☐ पांच वर्ष :501 ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :.....

बैंक का नाम:..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक:.....दिनांक:.....

स्थान:..... प्रतिनिधि का नाम:.....हस्ताक्षर सदस्य:.....

दिनांक:.....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

पशु अस्पतालों में चिकित्सकों की किल्लत

पश्चिमी दिल्ली: राजधानी में पशुओं की सर्वाधिक आबादी पश्चिमी दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों व डेयरियों में पाई जाती है। बावजूद यह क्षेत्र पशु चिकित्सा सेवा के मामले में पिछड़ा है। इस समस्या से नजफगढ़, मटियाला, बिजवासन व विकासपुरी विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण इलाके प्रभावित हैं। आलम यह है कि एक चिकित्सक के जिम्मे दो-दो अस्पताल हैं। पश्चिमी दिल्ली के विभिन्न गांवों में राजधानी में करीब एक तिहाई पशुओं की तादाद है। क्षेत्र में १३ पशु अस्पताल है। आठ डिस्पेंसरी व एक कृत्रिम गर्भाधान केंद्र है। जरूरत के मुताबिक इनमें कम से कम २२ चिकित्सक की ड्यूटी होनी चाहिए, लेकिन २२ चिकित्सकों के मुकाबले जिले में केवल १० चिकित्सक कार्यरत हैं। जरूरत को देखें तो अस्पताल हो या डिस्पेंसरी हर जगह कम से कम एक चिकित्सक, एक कंपाउंडर, एक चौकीदार की जरूरत है, लेकिन चिकित्सकों व कंपाउंडर (वीएलआई) के मामले में यह आदर्श स्थिति कभी पूरी नहीं हुई।

सर्वाधिक डेयरी इसी क्षेत्र में

राजधानी में डेयरी की कुल संख्या छह है। इनमें आधे यानी तीन डेयरी सिफ पश्चिमी दिल्ली में हैं। गोयला, ककरौला व नंगली डेयरी इसी क्षेत्र में आती हैं, जबकि दिल्ली के सर्वाधिक गांव भी इसी क्षेत्र में आते हैं। इनमें पशुपालन करने वालों की अच्छी खासी तादाद है।

सृष्टि एग्रो पाक्षिक के स्वामित्व के बारे में विवरण (फार्म) प्रपत्र 4 (नियम-8)

1)प्रकाशक का स्थान:	३०७, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - ४०००६४
2) प्रकाशन का काल:	पाक्षिक
3)मुद्रक का नाम:	सुरेश जी शर्मा
क्या भारत के नागरीक हैं:	भारतीय
4)मुद्रक का स्थान:	सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-६२
5)प्रकाशक का नाम:	सुरेश जी. शर्मा
क्या भारत के नागरीक हैं:	भारतीय
पता:	३०७, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - ४०००६४
6)संपादक का नाम:	सुरेश जी. शर्मा
क्या भारत के नागरीक हैं:	भारतीय
पता:	३०७, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - ४०००६४
समाचार पत्र के मालिक के अलावा जो एक प्रतिशत से अधिक के भागीदार है:	कोई नहीं
मालिक का नाम:	सुरेश जी. शर्मा
क्या भारत के नागरीक हैं:	भारतीय
पता:	३०७, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - ४०००६४

मैं सुरेश जी. शर्मा यह घोषित करता हूं कि उपरोक्त लिखित विवरण मेरी जानकारियां एवं विश्वास के साथ सब सच है.

सुरेश जी. शर्मा

मुद्रक,प्रकाशक, मालिक एवं संपादक

नीबू के प्रमुख रोग और उनका प्रबंध

हरिदयाल चौधरी और मुकेश कुमार जाट
पीएचडी उद्यान विज्ञान विभाग . पीएचडी पादप व्याधि विभाग
एस के एन कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर जोबनेर पिन 303329

विटामिन सी की अधिकता के कारण स्कर्वी रोग के उपचार में इसका उपयोग किया जाता है । रोग प्रतिरोधक गुण के अतिरिक्त नीबू का प्रयोग परिरक्षित रस, साइट्रिक अम्ल पेय पदार्थ, मार्मलेड, अचार, तेल, इत्र व दवाइयां आदि बनाने में किया जाता है। विगत 30 वर्षो मे नीबू वर्गीय फलो का क्षेत्रफल किया जाता है। विगत 30 वर्षो में नीबू वर्गीय फलो का क्षैत्रफल व उत्पादन क्रमशः 11 तथा 9 प्रतिशत बढ़ा है, परन्तु दुर्भाग्यवश औसत उत्पादन ब्राजील, अमेरिका व चीन से बहुत कम है। इसका प्रमुख कारण इसमें लगने वाले रोगो के बारे में ज्ञान और बचाव के तरीकों के अभाव के कारण किसान सिवाय नुकसान उठाने के अलावा कुछ नहीं कर पातें है। अतः इनमें लगने वाली मुख्य बीमारियों तथा इनकी प्रभावी नियंत्रण के बारे मे जानकारी निम्नानुसार है।

भारत में नीबू वर्गीय फलों का आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, गुजरात, मध्य प्रदेश एवं कर्नाटक आदि राज्यों में उत्पादन किया जाता है। उत्पादन के हिसाब से भारत में उगाये जाने वाले फलों मे केला व आम के बाद नीबू वर्गीय फलों का तीसरा व क्षेत्रफल में आम के बाद दुसरा स्थान है।

नीबू का केंकर रोग

यह वर्षा ऋतु के समय होने वाला सबसे भंयकर रोग है। यह रोग जैन्थोमोनास कॉम्पेसिट्रस पैथोवार सिट्राई नामक जीवाणु द्वारा होता है। इस रोग के लक्षण पौधे के सभी भागों जैसे तना, पत्ती, टहनियां तथा फल आदि पर शुरू मे हल्के पीले दाग दिखाई देते है, जो निरंतर बढ़ते हुये कठोर भूरे रंग के उभरे हुये छालों में बदल जाते है। ये छाले एक विशेष प्रकार के पीले घेरे से घिरे होते है। ये छोले फलो के छिलके तक ही सीमित रह जाते है और इसके गूदे को नहीं भेद पाते है। फलों पर धब्बों के कारण उनमें रस की मात्रा कम हो जाती है और उनका बाजार मूल्य भी कम हो जाता है। इसके कारण किसानों को बहुत अधिक आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

रोग का प्रबंधन

◆रोग से ग्रसित सभी टहनियो और शाखाओं को मानसून से पहले काट छांट करके जला देना चाहिये और शाखाओं के कटे हुये सिरों को बोर्डो पेस्ट से लेप करने से रोग फैलने से बचाया जा सकता है।

◆स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 100 पी.पी.एम. (10 ग्राम स्ट्रोप्टोसाइक्लिन + 5 ग्राम कॉपर सल्फेट 100 लीटर पानी मे मिलाकर) का छिड़काव करें।

◆ब्लाइटॉक्स (0.3 प्रतिशत) या मैन्कोजैब का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करने से रोग की अच्छी रोकथाम होती है।

नीबू का हरितमा रोग (सिट्रस ग्रीनिंग)

यह रोग नीबू वर्गीय पौधों का सबसे विध्वसकारी रोग है। यह एक अविकल्पी जीवाणु जनित रोग है, जिसकों सीट्रस साइला नामक कीट फैलाने मे वाहक का कार्य करता है। पौधो की पत्तियों के पीले भागों के बीच हरे धब्बे दिखाई देना, शिराएं पीली पड़ जाना, पत्तियां छोटी तथा मोटी हो जाना तथा प्ररोह का उपर की ओर सुखना इस रोग के मुख्य लक्षण हैं रोग ग्रसित पोधो मे पत्तियां और फल अत्यधिक गिरते है तथा पौधा बौना रह जाता है। रोगी पौधो के फल छोटे और विकृत आकार, कम ज्यूस और अरोचक स्वाद के कारण मूल्यहीन हो जाते है।

रोग का प्रबंधन

◆स्वस्थ पौधो से सांकुर (सायन) लेना

◆रोग के वाहक कीट सिट्रस सिल्ला को नियंत्रण करने के लिये फास्फोमिडान (0.025 प्रतिशत) अथवा इमिडाक्लोप्रिड (0. 04 प्रतिशत) का छिडकाव करना चाहिये।

◆15 दिन के अंतराल पर टेट्रासाइक्लिन छिडके या बाविस्टीन और लेडमाइसिन (500. 500. 10 लाख भाग पानी) 8 दिन के अंतराल पर छिडकाव करें।

◆रोग ग्रसित पौधो पर प्रति जैविक टेट्रासाइक्लिन 500 पी.पी. एम. का इन्जेक्शन देने से रोग अस्थायी रूप से रूक जाता है।

नीबू का ट्रिसटेजा या शीघ्र पतन रोग

यह एक विषाणु जनित रोग है जो नीबू के माहू (टोक्सोप्टेरा सिट्रिसिडा) से संचारित होता है रोग ग्रसित पौधो की पत्तियां पीली होकर झड जाती है तथा शाखाएं उपर की ओर से सूखना प्रारम्भ कर देती है। जैसे–जैसे रोग के लक्षण बढ़ते जाते है तो यह गंभीर पर्ण हरिमाहीनता व पत्तियो पर जगह जगह हरे धब्बे मे बदल जाता है। रोगी पौधो की जडे सड़ जाती है तथा पौधे मर जाते है। कुछ पौधे रातों रात उकठा रोग के लक्षण दर्शाते है और दो या तीन दिन मे पूर्णतः सूख जाते है इसलिए ट्रिसिटजा रोग को क्विक डेक्लाइन (शीघ्र पतन) रोग भी कहते है।

रोग की रोकथाम

◆अच्छी कृषण क्रियाये, जल निकास की उत्तम व्यवस्था और भूमि उर्वरता स्तर बढाने से रोग को कम करने मे सहायता मिलती है।

◆स्वस्थ तथा प्रभावित पोधो का रोपण करना चाहिए।

◆प्रतिरोधी मूलवृन्त जेसे रफलेमन, रंगपुरलाइम, जटटी–खटटी का प्रयोग करना चाहिए।

◆रोग वाहक माहू (एफिड) नियंत्रण हेतु डाइमेथोएट या मोनोक्रोटोफोस की 1.5 मि.ली./ लीटर पानी के हिसाब से छिडकाव करें।

◆प्रभावित पौधे को जड से उखाडकर नष्ट कर देना चाहिए।

नीबू का गमोसिस रोग

यह रोग फाइटोफथोरा नामक कवक के द्वारा होता है। इस रोग के लक्षण पत्तियों के पीले पडने से शुरू होते है। इस रोग से प्रभावित पौधो के तनो पर भूमि के पास से और टहनियों के रोग ग्रस्त भाग से गोंद जैसा पदार्थ निकलकर छाल पर बूंदो के रूप में इकट्ठा हो जाता है, जिसकी वजह से छाल सूखकर फट जाती है और भीतरी भाग भूरे रंग का हो जाता है। गंभीर संक्रमण के कारण पौधे नष्ट हो जाते हे।

रोग का प्रबंधन

◆नियंत्रण के लिए रोग ग्रस्त छाल खुरचने के बाद मेटालेक्जाइल एम.जेड.–72 अथवा रिडोमिल एम.जेड. 20 ग्राम तथा अलसी का तेल एक लीटर को अच्छी तरह से मिलाकर लेप कर दीजिये।

◆ब्लाइटॉक्स 0.3 प्रतिशत का छिडकाव 4–5 बार 15 दिन के अंतराल पर करें।

◆प्रतिरोधी मूलवृत जेसे ट्राइकोलिएट औरेन्ज, रंगपुरलाइम का चुनाव करना चाहिए।

◆जल निकास की उत्तम सुविधा होनी चाहिए।

◆पौधो के मूलस्तभ को पानी के संपर्क से बचाने हेतु थाला विधि से सिंचाई करनी चाहिए तथा पौधे के मूलस्तभ पर मिट्टी चढ़ानी चाहिए।

◆पौधो को घावों से बचाना चाहिये।

◆पौधे के जमीन से लगे भाग को बोर्डो मिश्रण से (50–75 सेंमी. उचाई तक) पोत देना चाहिए।

नीबू का उल्टा सूखा या डाई बैक रोग

यह रोग कोलेटोट्राइकम ग्लोइयोस्पोरॉइडस नामक कवक द्वारा होता है। रोग प्रभावित पौधो की रोगी शाखायें शीर्ष से लेकर नीचे की और सुखने लगती है। पत्तियों पर भूरे बैंगनी धब्बे दिखाई पड़ते है तथा वे मुरझाकर पीली पड़ जाती है। अततः संपूर्ण पौधा सूख जाता है।

रोग का प्रबंधन

◆उद्यानों में जल, निकास, खरपतवार नियंत्रण, पोषक तत्वों की पूर्ति, रोग और कीडो का प्रबंधन समय समय पर करना चाहिए।

◆सूखी हुई व रोग ग्रसित शाखाओं को काट देना चाहिए और इनके काटे गये सिरों को बोर्डो पेस्ट से लेप कर देना चाहिए।

◆रोग ग्रसित भाग की कटाई के बाद कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत या मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिडकाव करना चाहिए।

◆यूरिया का 100 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी को घोल बनाकर पौधो का ओज बढाने के लिये छिडकाव करना चाहिए।

◆बोर्डो मिश्रण 1.0 प्रतिशत अथवा जिनेब या केप्टान 0.2 प्रतिशत घोल का छिडकाव करने से अच्छा जिनेब या केप्टान 0.2 प्रतिशत घोल का छिडकाव करने से अच्छा रोग नियंत्रण होता है।

◆पौधों की उचित सिंचाई करनी चाहिए।

◆जल निकास की उत्तम व्यवस्था होनी चाहिए।

नीबू का केंकर रोग रोग के मुख्य लक्षण

नीबू का ट्रिसटेजा या शीघ्र पतन रोग के मुख्य लक्षण

नीबू का उल्टा सूखा के मुख्य लक्षण

नीबू का गमोसिस रोग के मुख्य लक्षण

नीबू का हरितमा रोग के मुख्य लक्षण

प्याज की फसल को बचायें कीटों – रोगों से

डॉ. पंकज शर्मा
प्रभारी कृशि विज्ञान केन्द्र, बानसूर (अलवर)

राजस्थान राज्य में प्याज की खेती मुख्य रुप से उदयपुर, भीलवाड़ा, कोटा तथा बांसवाड़ा खण्ड में की जाती हैं। राज्य स्तर पर इसकी उपज राश्ट्रीय स्तर से बहुत कम हैं। उपज में कमी के प्रमुख कारणों में कीटों व बीमारियों का प्रकोप होना है। प्याज में लगने वाले प्रमुख कीटों व रोगों की समय पर पहचान कर और नियन्त्रण उपाय अपनाकर किसान भाई अच्छी उपज प्राप्त कर सकते हैं।

बैंगनी धब्बा रोग–

यह आल्टरनेरिया पोराई फफूँद के संक्रमण से फैलता है। रोग की प्रारंभिक अवस्था में पत्तियों तथा उर्ध्व स्तंभ पर अंदर की तरफ सफेद की तरफ सफेद, बैंगनी रंग के चकते बल जाते है जो बाद में बड़े बैंगनी धब्बों में बदले जाते हैं। रोग संक्रमण के स्थान पर पत्ति एवं तना कमजोर होकर गिर जाते हैं। इस बीमारी का प्रकोप फरवरी–अप्रैल के महीनों में अधिक होता हैं। रोग नियंत्रण के लिये–

बीजों को बुवाई के पूर्व थायरस + कार्बेन्डिजम के ग्राम सम मिश्रण प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें। मैनकोजेव 0.25 प्रतिशत या कार्बेन्डिजम 0.5 प्रतिशत +सेंडोबिट 0.1 प्रतिशत का 500 से 700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें आवश्यकता पड़ने पर 15 बाद पुनः दूसरा छिड़काव करें।

झुलसा रोग–

यह रोग स्टेमफिलियम वेसिकेरियम फफूँद के द्वारा फैलता हैं। रोग प्रकोप की स्थिति में पत्तियों का शीर्ष भाग झुलस जाता है एवं भूरी धारियां बन जाती हैं। रोग के नियंत्रण के लिय–

मैनकोजेव 0.25 प्रतिशत या कार्बेन्डिजम 0.5 प्रतिशत +सेंडोबिट 0.1 प्रतिशत के अतंराल पर 500 से 700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें ।

कॉपरऑक्सी क्लोराइड 0.25 प्रतिशत + सेंडोबिट 0.1 का 15 दिन के अंतराल पर 500 से 700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बेसल रॉट–

बेसल रॉट या तनाधार गलन रोग यूजेरियम ऑक्सीस्पोरियम कवक के संक्रमण से फैलता है। रोग की प्रारंभिक अवस्था में जड़े गुलाबी रंग की होती है, पत्तियां शीर्ष सें आधार की तरफ तेजी से सूखने लगते है। जड़े भी धीरे–धीरे गलना शुरू हो जाती हैं और यह गलन कंद तक पहुँच जाता है। रोग नियंत्रण के लिये।

ग्रीष्म कालीन जुताई करें।

रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन एवं फसल चक्र अपनायें।

थायरस + कार्बेन्डिजम के ग्राम सम मिश्रण से प्रति किलो बीज की दर से बीजों को उपचारित कर बुवाई करें। थायरस 0.2 प्रतिशत से मृदा का सिंचन करें।

मृदु रोमिल आसिता–

रोग पेरेनोस्पोरा डेस्ट्रक्टर फफूंद के द्वारा फैलता है। पत्तियां और पुष्पीय स्तंभ पर बैंगनी रंग के रांए उभर आते हैं जो बाद में हल्की हरी झॉई के साथ पीला रंग ग्रहण कर लेते हैं। रोग से ग्रसित पौधो की पत्तियो व स्तंभ सुख जाते है। रोग ग्रसित पौधो के कंदों के बाहरी मांसल शल्क सुनहरे के हो कर शीघ्र सड़ जाते हैं। रोग नियंत्रण के लिये–

मैनकोजेब 0.25 या मैटालैक्जिल 0.1 प्रतिशत + सेंडोबिट 0.1 प्रतिशत का 500 से 700 लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव इस रोग की रोकथाम में सहायक होता है।

जीवाणु मृदु विगलन–

यह रोग इर्विनिया कैरोटोवोरा जीवाणु द्वारा होता हैं। इसके कारण प्याज के कंद भंडार गृह में सड़ जाते है। रोग का संक्रमण खेत से ही होता हैं। रोग से प्रभावित कंदों को दबाने पर शीर्ष भाग से पानी जैसा तरल पदार्थ निकलता हैं। रोग नियंत्रण के लिये–

कंदों को हवादार तथा कम नमी वाले भंडारगृहों में कंदों को अच्छी तरह से सुखाकर, उनके ऊपर छिलकों की छंटाई कर रखना चाहिये।

थ्रिप्स–

प्याज की फसल का थ्रिप्स सबसे अधिक हानिकारक कीट हैं। यह पत्तियों का रस चूसता हैं फलस्वरूप पत्तियां चितकबरी हो जाती है। पत्तियों के शीर्ष भूरे होकर मुरझाने लगते है और पौधे सूख जाते हैं। कीट नियंत्रण के लिये–

मिथाईल डेमेटान 0.5 प्रतिशत या मैलाथियान 0.5 प्रतिशत + सेंडोबिट 0.1 प्रतिशत का 500 से 700 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

फोरेट या कार्बोयूरान 1 से 1.5 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हेक्टर भूमि में डालकर भी इस कीट की रोकथाम की जा सकती हैं।

शीर्ष छेदक एवं मैगट–

शीर्ष छेदक व मैगट एवं इनकी लार्वी पत्तियों के आधार को खाते हैं और वल्व के अन्दर छेंद बनाकर प्रवेश कर जाते हैं और सड़न पैदा कर फसल को नुकसान पहुँचाते हैं। कीट नियंत्रण के लिये–

उपयुक्त फसल चक्र व स्वच्छ खेती प्रक्रियें अपनाकर इन कीटें से फसल को बचाया जा सकता हैं।

फोरेट या कार्बोक्यूरान 1 से 1. 5 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति भूमि में मिलाकर भी इस कीट की रोकथाम की जा सकती है।

मेलाथियान 0.5 प्रतिशत या फास्फोमिडान 0.25 प्रतिशत के साथ सेंडोविट 0.1 प्रतिशत के 500 से 700 लीटर घोल का छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

थ्रेसर के पास जरा सी चूक से हादसे संभव

डॉ. पंकज शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी
कृषि विज्ञान केन्द्र बानसूर

इन दिनो खेतों में सरसों की कटाई के बाद थ्रेसर से निकालने का काम शुरू हो चुका है। थ्रेसर से उपज निकालने के दौरान बहुत बार दुर्घटना या हादसे होने की जानकारी मिलती रहती है। थ्रेसर चलाते समय थोड़ी सी असावधानी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है। दुर्घटनाओं को देखते हुये कई बातों का ध्यान रखना चाहिये। इस सबंध में किसानों को सलाह दी है कि:

थ्रेसर पर काम करने वाले श्रमिकों की पगड़ी, धोती या कमीज ढीली नही हो।

थ्रेसर के सिलैंडर में फसल डालने वाले श्रमिक हाथ में घड़ी, कंगन आदि नही पहनें। महिलाओं के बाल खुले नही हों।

काम करने वाले मजदूरों से अधिक काम लेने के लिये उन्हें शराब, भांग, अफीम आदि नशीली वस्तु का सेवन नहीं करें।

शारीरिक रूप से कमजोर, बुढों व अस्वस्थ व्यक्तियों को थ्रेसर में फसल डालने का काम नहीं सौंपें।

थ्रेसर के आस पास काम करने के लिये खुली जगह रखें, ताकि काम करने वालों को रूकावट नहीं हो।

थ्रेसर में फसल डालने की नाली ठीक से लगायें। नाली की लंबाई कम से कम एक मीटर होनी चाहिये, जिसमें से आधा मीटर उपर से ढकी होनी चाहिये।

थ्रेसर के सिलैंडर में फसल डालने के लिये अनुभवी व्यक्ति को ही लगायें।

थ्रेसर की नाली में भीतर तक हाथ नही दें और चलते हुये थ्रेसर से छेड़छाड़ नही करें।

मशीन संबंधी सवधानियां

टैक्ट्रर व थ्रेसर को इस प्रकार टिकायें कि चलती हवा से आग लगने का खतरा नही हो।

टैक्ट्रर पर हमेशा धुंआ निकालने वाली खड़ी नाली का प्रयोग करें और इस नाली पर चिंगारी रोकने वाला पुर्जा भी लगायें।

बिजली के खंभों के नीचे फसल का ढेर नही लगायें। बिजली की लाईन के जोड़ ढीले, खुले या असुरक्षित नही हों। बिजली की मोटर का मेन स्विच ऐसी जगह हो, जहां चालक को पहुंचने में आसानी रहे।

थ्रर्सिंग के स्थान पर आग से बचाव के लिये पर्याप्त मात्रा में पानी, रेत भरी बाल्टियां या मटकों की व्यवस्था हो।

मशीन को ठीक से लगायें ताकि यह हिले नही और पटटा भी ठीक तरह से तना रहे।

थ्रेसर की दिशा हवा की ओर होनी चाहिये, हवा जिस तरफ बह रही हो भूसा उधर ही गिरना चाहिये।

थ्रेसर के सिलैंडर में गीली फसल नही डालें, इससे अचानक आग भी लग सकती है।

कुछ देर आराम करने के बाद थ्रेसर के सिलैंडर में फसल डालने वाले व्यक्ति को बदलते रहें। काम करने वाले को बातों में नही उलझायें।

प्रत्येक पाली में थ्रेसर पर आठ घंटे से अधिक काम नही करें।

संभव हो तो सुर्यास्त होने पर थ्रेसर नही चलायें। यदि रात में थ्रेसर चलाना ही हो तो रोशनी की अधिक व्यवस्था करें।

कार्यस्थल पर प्रारंभिक चिकित्सा का सामान अवश्य रखें।

मंथन

चुनाव और कृषि

2014 का लोकसभा चुनाव अब पास है और जब चुनाव पास आता है तो सरकार की नींद अचानक टूटती है. उसे आम लोगों के प्रति अपने कर्तव्य की याद आती है. यह वर्ष भी अपवाद नहीं है. फिर बात चाहे सेवानिवृत्त रक्षाकमिऱ्यों के वन रैंक-वन पेंशन की हो, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून के तहत गरीबों को हर माह मिलने वाले अनाज की हो अथवा केंद्रीय सरकारी कमिऱ्यों के लिए महंगाई भत्ते में वृद्धि समेत सातवें वेतन आयोग की घोषणा की हो या फिर जाट आरक्षण के एलान की. कुल मिलाकर यह सूची बहुत लंबी है. यह चुनावी उपहार का समय है. आप जितने ज्यादा संगठित हैं और जितना अधिक आपका जनाधार है, आपके लिए संभावनाएं भी उतनी ही अधिक हैं, लेकिन आश्चर्य यह कि आबादी का एक बड़ा हिस्सा होने के बावजूद किसान अभी भी उपेक्षित हैं. पूरे देश में एक बड़ा वोट बैंक होने के बावजूद किसानों की स्थिति में खास अंतर नहीं आ सका है. ऐसा इसलिए है, क्योंकि एक समुदाय के रूप में वे बंटे हुए हैं और विभिन्न आधारों पर मतदान करते हैं, न कि एकीकृत किसान शक्ति के रूप में. इन वजहों से कोई भी राजनीतिक दल उन्हें गंभीरता से नहीं लेता. हालांकि ज्यादातर कमियां किसान संघों और संगठनों के नेतृत्वकर्ताओं की है. इनमें से ज्यादातर खुद लोकसभा टिकट के लिए लालायित हैं और नेताओं के समक्ष नतमस्तक हैं. यदि आज किसान बड़ी राजनीति शक्ति नहीं बन सके हैं तो इसके लिए यही लोग जिम्मेदार हैं. अध्ययनों के मुताबिक भारत में 60 फीसद किसान भूख की कगार पर हैं. किसी किसान का भूखे पेट सोना कृषि क्षेत्र में व्याप्त भयावह संकट को रेखांकित करता है. हालांकि अभी भी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है. यही समय है जब पूरे देश के किसान संगठनों को संगठित होकर चुनाव से पूर्व एक एकीकृत योजना पेश करनी चाहिए.

रासायनिक कीटनाशकों और खाद के अत्यधिक इस्तेमाल से न केवल कृषि भूमि की उर्वरता नष्ट हो रही है, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों का आधार खत्म हो रहा है और भूमिगत जल प्रदूषित हुआ है. इससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ी हैं. इस कारण टिकाऊ खेती के लिए देशव्यापी मिशन शुरू करने की आवश्यकता है. आंध्र प्रदेश में 35 लाख एकड़ से अधिक जमीन पर आज गैरकीटनाशक प्रबंधन उपायों को अपनाया गया है. वहां किसान 20 लाख हेक्टेयर जमीन पर रासायनिक खादों का प्रयोग त्याग चुके हैं. बावजूद इसके वहां उत्पादन में बढ़ोतरी हुई है.

. कृषि को आर्थिक रूप से लाभप्रद और टिकाऊ बनाने की आवश्यकता है. खेती अब भी सबसे बड़ा रोजगार क्षेत्र है. कृषि में रोजगार खत्म करना और शहरों में छोटी नौकरियां पैदा करना आर्थिक विकास नहीं है.

ऋतु कपिल

कार्यकारी संपादक

टमाटर की फसल में कीट एवं रोग प्रबन्धन

राम गोपाल सामोता', डॉ. बी.एल. जाट' एवं मंगलाराम बाज्या''
(कीट विज्ञान विभाग)
'श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर
''इंस्टीट्यूट ऑफ पेस्टीसाईड फार्मूलेशन टेक्नोलॉजी, गुडगाँव (हरियाणा)

टमाटर दुनिया की एक प्रमुख फसल है जिसने अपने विशेष पोषक मूल्यों की वजह से लोकप्रियता हासिल की है। यह दुनिया के हर देश में उगाया जाता है। टमाटर की फसल को मुख्य रूप से फल छेदकों से नुकसान पहुँचता है।

कीट :–

1.चने की सुंडी :– यह एक बहुभक्षी कीट है जो टमाटर को भारी नुकसान पहुँचाता है। पौधे में फूल आने से पहले के समय में सुंडी कोमल शाखाओं, पत्तियों तथा फूलों को खाती हैं, जिसके कारण फसल छिद्रित दिखती है। फल लगने के बाद, सुंडी फल में गोल छेद बनाकर अपने शरीर का आधा भाग अंदर घुसाकर फल का गूदा खाती है जिस कारण फल सड़ जाता है।

2.तम्बाकू की सुंडी :– यह भी एक बहुभक्षी कीट है। इसकी सुंडियाँ चिकनी व काले रंग की होती है। यह टमाटर की सफल को काफी नुकसान पहुँचाता है। इसकी सुंडी प्रारम्भ मं समूह में रहकर पत्तियों की ऊपरी सतह को खुरचकर खाती है। पूर्ण विकसित सुंडियां पत्तियों को काटकर खाती है। इसका अधिक प्रकोप होने पर पौधा पत्तीविहीन हो जाता ह।

3.सफेद मक्खी :– इसके वयस्क एवं शिशु पत्तियों का रस चूस लेते हैं तथा पत्ती मरोड़क, मोजैक बीमारी फैलाते हैं, छोटे सफेद जीव पत्तियों के नीचे पाए जाते हैं। सफेद मक्खी से ग्रसित पत्तियों में काले फफूंद की बीमारी लग जाती है।

4.लीफ माइनर :– इसकी मादा पत्तों की शिराओं में छेद करके उनमें अंड़े देती है। यह पत्तियों का हरा पदार्थ खाकर उनमें सुरंगें बनाती है।

5.चेंपा :– इसके अर्भक एवं वयस्क दोनों ही पत्तियों व ऊपरी टहनियों का रस चूसकर पौधों को हानि पहुँचाते हैं जिससे पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती है व नीचे की ओर झुक जाती है।

6.मीलीबग :– पौधों पर ध ब्बे दिखाई देते हैं। ये कीट पौधे के विभिन्न भागों का रस चूसते हैं जिसके परिणामस्वरूप पौधे छोटे रह जाते हैं। इनका कभी–कभी प्रकोप होता है।

7.फ्रूट–सकिंग मोथ :– इस कीट के प्रौढ़ मोथ टमाटर के पके फलों में छिद्र करके प्रवेश कर जाते हैं और उनका रस चूसते है। क्षतिग्रस्त क्षेत्र मुलायम और सड़ जाता है। यदि उसे ध्यान से देखा जाए तो पिन के छिद्र जैसा लगता है।

8.जैसिड़ :– ये हरे रंग के छोटे कीड़े होते है। शिशु एवं प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों का रस चूसकर फसले को क्षति पहुँचाते हैं।

रोकथाम :–

1.एक ही कीटनाशी का बार–बार प्रयोग न करें।

2.रासायनिक कीटनाशकों के छिड़काव से पूर्व फलों को तोड़ लें तथा क्षतिग्रस्त फलों को जमीन में गाड़कर नष्ट कर दें।

3.खेत की गहरी जुताई करने से मिट्टी में मौजूद प्यूपा व सुंडियां पक्षियों द्वारा खा लिए जाते हैं या तेज धूप द्वारा नष्ट हो जाते हैं।

4.पत्ती मरोड़क प्रतिरोधी किस्में उगायें और बीमारी से ग्रसित पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दें।

5.टमाटर की रोपाई करने के दौरान प्रत्येक 10–15 कतार के बाद गेंदे के पौधों की कतार की रोपाई करें। ऐसा करने से चने की सुंडी का नियंत्रण होता है।

6.फल छेदक की निगरानी के लिए पांच फेरोमोन ट्रैप प्रति हैक्टेयर के दर से लगाएं।

7.रस चूसने वाले कीटों से बचाव के लिए इमीडाक्लोप्रिड़ (2 मि.लि./10 ली.) या थायामिथोक्साम (2 ग्रा./10 ली.) का प्रयोग करें।

8.ट्राइकोग्रामा काइलोनिस का प्रयोग फल छेदक के नियंत्रण के लिए 50,000 प्रति हैक्टेयर की दर से दो से तीन बार करें।

9.सुंड़ियों से संबंधित एन.पी.वी. का छिड़काव 250 एल.ई./है. के दर से करें।

10.एक या दो छिड़काव 1 ग्रा./ली. के दर से बी.टी. का 15 दिनों के अन्तराल पर करें।

11.आवश्यकता होने पर मिथाइल डेमेटोन (2 मि.लि./ली.) या डेल्टामेथ्रिन (1 मि.लि./ली.) या कार्बोयूरान (2 ग्रा./ली.) का वैकल्पिक छिड़काव करें।

रोग :–

1.आर्द्र विगलन (डेम्पिंग आफ) :– यह रोग पिथीयम/फाइटोथोरा प्रजाति की फफूँदियों द्वारा होता है। इस रोग के कारण अंकुरण से पूर्व पौधे मर जाते है। रेडिकल एवं प्लूमूल दोनों पूरी तरह से सड़ जाते हैं। पौधे उगाने के उपरान्त इस रोग के कारण पौधे किसी समय गिर जाते हैं। इस रोग का प्रकोप जमीन की सतह या नीचे पौधों पर होता है जिसक पौधे जलसिक्त और कोमल हो जाते हैं तने का आधार सिकुड़ जाता है और पौधा गिर जाता है। यह रोग पौधशाला में लगता है।

नियंत्रण :–

पौधशाला वाली भूमि को बीज बौने से 15–20 दिन पहले फार्मेलिन के घोल (5 लीटर फार्मेलिन + 100 लीटर पानी) से भली–भाँति तर कर दें। बीज तब बोयें उससे फार्मेलिन की दुर्गन्ध समाप्त हो जाए। जैसे ही पौधों पर इस रोग के लक्षण दिखाई दे तब ही 0.25 प्रतिशत मैन्कोजेब को घोलकर छिड़काव करें।

2.आल्टरनेरिया ब्लाइट :– यह रोग ''आल्टरनेरिया सोलेनाई'' नामक फफूँदी के कारण होता है। पत्तियों पर छोटे, एकल बिखरे पीले–भूरे रंग के धब्बों का निर्माण हो जाता है। ये धब्बे बाद में सक्रिय हो जाते है और हरिमाहीन ऊतकों का निर्माण हो जाता है और पीले पड़ने के लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं जो फलों पर भी दिखाई देते हैं। अनुकूल परिस्थितियों में इस रोग से 70 प्रतिशत तक क्षति हो जाती है।

नियंत्रण :–

स्वस्थ फसल के बीज ही बोएं। बीज बोने से पूर्व थाइरम 75 डब्ल्यू.पी. 2.53 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित करके बोएं।

हेक्जाकेय (0.25प्रतिशत) का 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

खेत से खरपतवारों का सफाया करें।

लीफ कर्ल :– टमाटर का यह प्रमुख रोग है, यह रोग फल मक्खी से फैलता है। प्रभावित पौधों में पत्तियाँ छोटी, मुड़ी हुई झाड़ीनुमा, अविकसित, शाखाएँ छोटी होती है।

नियंत्रण :–

रोग रहित पौधों का रोपण करें। रोग प्रभावित फसल पर मैलाथियॉन 50 ई.सी. 1.5 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

जीवाणु उकठा :– यह रोग ''रालस्टोलिया (स्यूडोमोनास) सोलेनासीएरम'' नामक जीवाणु के कारण होता है। इस रोग का मुख्य लक्षण यह कि बिना पीला पडे पूरा पौधा मुरझा जाता है और नीचे को गिर जाता है। यदि तने को काटकर उसे दबाया जाये तो जीवाणु स्पष्ट दिखाई देते है। इस रोग के कारण पौधे अकस्मात मुरझा जाते हैं। अन्त में मर जाते हैं जिसके कारण 100 प्रतिशत क्षति हो जाती है।

नियंत्रण :–

सदैव रोग मुक्त पौधों की रोपाई करें।

रोग प्रभावित खेत में 3 वर्षीय फसल–चक्र अपनाएँ जिनमें खाद्यान्न/कूसीफेरी परिवार की फसलें उगाएँ।

5.जड गाँठ सूत्रकृमि रोग :– प्रभावित पौधों की जड़ों में बड़ी–बड़ी गांठों का निर्माण हो जाता है और पौधों की पत्तियाँ पीली पड़ जाती है।

नियंत्रण :–

रोपाई से पूर्व पौधों को थियोनासिन 500 मिली./लीटर पानी के घोल में डुबोना चाहिए। सूत्रकृमि रोधक किस्में जैसे पूसा 120 व पूसा संकर उगानी चाहिए।

नर्सरी में कीट व्याधियों का नियन्त्रण

डॉ. पंकज शर्मा
प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र, बानसूर (अलवर)

सामान्यतः फसलों को सीधे खेत में ही उगाया जाता है परन्तु कुछ फसलें विशेषकर सब्जियां , फल व पुष्प जिन्हें सीधे खेत में न उगाकर नर्सरी में पौध तैयार करके उगाया जाता है। फसल की अच्छी पैदावार व गुणवत्ता हेतु नर्सरी में पौध को स्वस्थ रखना आवश्यक है। कभी कभी नर्सरी में सारी शस्य क्रियाओं का समय पर प्रयोग करने के बावजूद ष पौधे सूखते हुये नजर आते हैं और किसान इसे समझ नहीं पाता जबकि यह विभिन्न कीट व रोगों का प्रकोप रहता है जिनका समय पर रोकथाम आवश्यक है।

प्रमुख रोग : आर्द्रपतन

बीज के अंकुरित होने से पहले मृदा की सतह पर पहुँचने से पहले ही बीजांकुर मर जाते है क्योंकि ऐसा मृदा के भीतर ही होता है जिनसे उत्पादक इसको जान नहीं पाता और वह इसे रोग न समझकर बेकार किस्म का बीज समझ बैठता है।

दूसरी अवस्था में पौध नर्सरी में उग जाती है परन्तु वह शीघ्र ही गिर जाती है ऐसा कवक मृदा तल अथवा इससे नीचे संक्रमण करता है। नर्सरी में रोगग्रसित बीजांकुरों के बड़े–बड़े क्षेत्र के रूप में दिखाई देते है। जब मृदा में नमी की मात्रा मध्य से उच्च तक तथा तापमान अधिक होता है तब रोग उग्र रूप धारण कर लेता है।

नियन्त्रण हेतु :

बीजों को आर्द्रपतन के प्रथम अवस्था से बचाने के लिये बीजोपचार करें। बीजोपचार के लिये बीजों को कार्बेन्डिजम या थायरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

मृदा उपचार भी अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिये एक भाग फार्मलीन को 50 भाग जल में मिलाकर नर्सरी की मिट्टी को चार इंच गहराई तक गीला कर देवें। इसके अतिरिक्त फाइटोलान (0.5 प्रतिशत) अथवा पेरेनाक्स (0.2 प्रतिशत) से भी मृदा को उपचारित कर सकते है।

नर्सरी की क्यारियां जमीन से कुछ ऊँची उठी हुई होनी चाहिये जिससे उचित जल निकास हो सके।

अच्छी प्रकार से सड़ी हुई खाद प्रयोग करें।

नर्सरी में मिट्टी तथा बालू की उचित मात्रा होनी चाहिये।

नर्सरी में अधिक बीज की बुवाई न करें।

प्रमुख कीट

दीमक : छोटे आकार का यह कीट जमीन में रहता है और अंदर से ही पौधों की जड़ों को काटकर खाता है जिससे पौधे मुरझाकर सूख जाते हैं। यह कीट पौधे के तने व टहनियों को नुकसान पहुंचाते हैं।

कातरा : मटमैले रंग की इस कीट की लट रात को निकलकर पौध शाला में पौधों को जमीन की सतह से काटकर गिरा देती है।

चैंपा व हरा तैला : पौधों की कोमल पत्तियों , कोंपलों से यह रस चूसता है जिससे उन पर सफेद पीले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं व पौध कमजोर हो जाते हैं। चैंपा पत्तियों व ग्रसित षग पर चिपचिपा पदार्थ छोड़ता है जिससे कई प्रकार की फफूंदी के संक्रमण का ष्य रहता है। ये कीट कई फसलों में विषाणु रोगों के वाहक का काम ष करता है।

तम्बाकू की लट : यह कीट अधिकतर खड़ी फसल में नुकसान करते हैं परन्तु नर्सरी में टमाटर, गोभीवर्गीय सब्जियों के पौधों को अपने काटने वाले मुखांगों से काटकर नुकसान करते हैं।

सफेद लट : इस कीट के लारवा नर्सरी व खेत दोनो में पौधों को हानि पहुंचाते हैं। इनकी लटें जमीन में रहती हैं और पौधों की जड़ों को काट देती हैं जिससे पौधे मर जाते हैं।

आरा मक्खी : हरे काले रंग की लटें पौधों की छोटी अवस्था में नुकसान करती है। यह सुबह या शाम के समय पत्तियों को खाती हैं व गोंल छेद बना देती है और अधिक उग्र अवस्था में पौधे को खत्म कर देती है।

उपरोक्त कीटों के अतिरिक्त कई प्रकार की घुंग, वीवल्स आदि नर्सरी में पौध को क्षति पहुंचाते है।

नियन्त्रण

नर्सरी की क्यारियां जमीन से कुछ ऊँची उठी हुई होनी चाहिये जिससे उचित जल निकास हो सके।

नर्सरी में सफाई का ध्यान रखना चाहिये। समय समय पर निराई गुड़ाई करते रहना चाहिये। खरपतवारों को उखाड़कर नष्ट कर देवें एवं कूड़ा करकट को एकत्रित कर जला देना चाहिये।

नर्सरी में बुवाई से पूर्व गर्मियों में गहरी जुताई करके इसे खुला छोडना चाहिये।

नर्सरी में पौध लगाने से पूर्व मृदा को मिथाइल पैराथियान से उपचारित करें जिससे उसमें उपस्थित अण्डे व प्यूपा खत्म हो जायें।

नर्सरी में उपयोग होने वाले बीजों को इमिडाक्लोप्रिड 2 गांम प्रति किग्र. बीज की दर से उपचारित करें जिससे रस चूसने वाले कीटों से लम्बे समय तक बचाव होता है।

नर्सरी मे खड़े पौधों को पत्ती काटने वाली सुण्डियों से रोकथाम हेतु एण्डोसल्फान या क्विनालफास की 2 मिली. मात्रा एक लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

नर्सरी में दीमक की रोकथाम के लिये क्लोरोपायरीफास को सिंचाई के साथ देवें।

नर्सरी के बाहर प्रकाश प्रपंच लगाकर रात्रि में आकर्षित कीटों को नष्ट कर देवें।

(पाक्षिक राशि फल)

01–04–2014 से
15–04–2014

ज्योतिषाचार्य -पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	मानसिक पारिवारिक परेशानियाँ.लाभ कम हानि अधिक , सावधानी रख
BKT	लाभ कम, धन हानि , मानसिक कष्ट का योग !
CLU	धन लाभ , खर्च अधिक आंशिक राहत का समय
DMV	कार्य अवरोध ,शारीरिक मानसिक शिथिलता का समय
NEW	भाई बन्धुओ का सहयोग बुद्धि द्वारा धन लाभ,नये व्यापार की संभावना
FOX	शारीरिक परेशानियाँ , मानसिक तनाव के बाद लाभ का योग
GPY	सन्तान द्वारा संताप मानसिक पारिवारिक परेशानियाँ धन हानि का योग
HQZ	स्थान परिवर्तन स्वजनो द्वारा विरोध शांति बनाये रखें
IR	शारीरिक पीड़ा,हाइपरटेंशन का समय शांती रखें

सुवचार

आप जितनी कम बोलेंगे,
आपकी उतनी ही ज्यादा सुनी जायेगी।

किसी के दिल को ठेस पहुंचाकर माफी मांगना बहुत ही आसान है, लेकिन चोट खाकर किसी को माफ करना बहुत ही मुश्किल है।

सूचना

पाक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों व लेख़ो में समाविष्ट सभी बातों की जाँच-परखकर पाना सँभव नही है विज्ञापनों में अपने उत्पादनों अथवा अपनी सेवाओं के बारे में विज्ञापनदाता जो दावे करते है ,सृष्टि एग्रो समाचारपात्र उसकी कोई गारंटी नही लेता. विज्ञापनों में किए गए दावो की पूर्ति यदि विज्ञापनदाता द्वरा नही होती है तो उसके लिए पाक्षिक सृष्टि एग्रो समाचारपत्र समूह के मुद्रा , संपादक ,प्रकाशक व मालिक किसी भी रूप में जवाबदेह नही होंगे,कृपया इसे ध्यान में रखे. अत: हम पाठकों से अनुरोध करते है कि विज्ञापन में उल्लेखित बातों के संदर्भ में कोई भी करार करने के पूर्व उसके बारे में आवश्यक छानबीन कर ले.

गुलाबी शहर के सड़कों पर बिछी सफेद चादर

जयपुर. जयपुर में आंधी, बारिश और ओलों की तिकड़ी ने कहर बरपाया। जयपुर में तूफानी ओले गिरने लगे। 15 मिनट में सड़कें, छतें सफेद हो गईं। तेज हवाओं से पेड़ गिरे, कई पक्षी मर गए। ओलों से वाहनों को भी नुकसान पहुंचा। शाम साढ़े चार बजे तापमान 31 डिग्री था जो साढ़े पांच बजे 17.6 डिग्री पर आ गया।

कलेक्टर ने ओलों से नुकसान की रिपोर्ट मांगी है।

26 दिन में दूसरा पश्चिमी विक्षोभ इसलिए बरसी आफत 1. पश्चिमी विक्षोभ के गोभी जैसे क्यूमबलो लिंबस (सीबी) काले बादलों के कारण 70 किमी रफ्तार का चक्रवात बन गया।

2. काले बादलों का तूफान 7 घंटे में श्रीगंगानगर से जयपुर पहुंच गया।

3. आसमान में पांच किमी ऊंचाई पर नमी की बूंदें जम गईं और 10 किमी जाते-जाते ये बर्फ के गोले तड़ातड़ बरसने लगे। जयपुर के बाद यह दौर अलवर की ओर मूव कर गया। यहां शाम सात बजे ओलावृष्टि हुई।

मतदाता जागरूकता के लिए शहरों, गांवों, ढाणियों तक अलख जगाएं -मुख्य निर्वाचन अधिकारी

जयपुर, मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री अशोक जैन ने लोकसभा चुनाव के लिए स्वीप कार्यक्रम के जरिए मतदाता जागरूकता अभियान को व्यापक बनाने का आह्वान किया हैं। उन्होंने कहा कि शहरों से लेकर सुदूर गांव ढाणियों तक मतदान के प्रति अलख जगाने के लिए जिला स्तर पर प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। श्री जैन शासन सचिवालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में स्वीप (सिस्टेमेटिक वोटर एजुकेशन एण्ड इलेक्ट्रोरल पार्टिसिपेशन) समितियों के अध्यक्ष एवं नोडल अधिकारियों की राज्य स्तरीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में विचार प्रकट कर रहे थे। उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग द्वारा स्वीप कार्यक्रम के जरिए मतदाताओं को मताधिकार के प्रति जागरूक बनाने के उद्देश्य से विधानसभा चुनाव के दौरान चलाए गए अभियान की वजह से ही 75 प्रतिशत से अधिक मतदान संभव हुआ। इस दौरान प्रदेश में पहली बार महिलाओं और युवाओं ने भी सक्रियता के साथ वोट देकर एक नया कीर्तिमान बनाया। उन्होंने कहा कि हमें इस माहौल का पूरा लाभ उठाते हुए लोकसभा चुनाव में भी 75 प्रतिशत से अधिक मतदान के लक्ष्य को पूरा करने के पुरजोर प्रयास करने चाहिए। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि राज्य स्तर पर स्वीप के माध्यम से किए जा रहे प्रयासों को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से ही 19 मार्च को निर्वाचन विभाग द्वारा अपने फेसबुक पेज, मोबाइल एप्स तथा मतदान के प्रति जागरूकता के लिए कॉलर ट्यून का शुभारंभ किया जाएगा। उन्होंने कहा कि स्वीप कार्यक्रम के जरिए हमने विधानसभा चुनाव में इस भ्रांति को भी दूर करने में सफलता पाई जिसके लिए अक्सर यही कहा जाता था कि शहरी मतदाताओं का वोट देने में रूझान कम रहता हैं। इस बार महिलाओं, पुरूषों एवं युवाओं ने शहरों तथा गांवों में लगभग समान रूप से मताधिकार किया।

फसलों को नुकसान

जयपुर, जौ, गेहूं और चने को नुकसान। जयपुर, दौसा, शेखावाटी में बारिश, ओलों से फसलें गिरीं। मंडी में अनाज भीग गया। श्रीगंगानगर, चूरू, पिलानी, धौलपुर, भीलवाड़ा और लालसोट में भी बारिश हुई है। 70 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चली हवा,13.40 पारा लुढ़का एक घंटे में18 मिमी बारिश दर्ज की गई जयपुर में,150 ग्राम तक के ओले गिरे शहर में शहर में हुई जोरदार ओलावृष्टि के दृश्य अभी जेहन से उतरे भी नहीं थे कि सोमवार को उससे भी कहीं तेज ओलों की तूफानी बारिश हुई। 67 से 70 किमी प्रति घंटे की रफ्तार वाली हवा के साथ बिजली और गोली की गति से गोले गिरे। करीब 15 मिनट में शहर का पूरा दृश्य बदल गया। झोटवाड़ा, सीकर रोड, शास्त्रीनगर, चारदीवारी, टोंक रोड, जेएलएन मार्ग, मालवीय नगर, सांगानेर में चने से लेकर अंडे के आकार तक के ओले गिरे। सभी इलाकों में देर रात तक बिजली गुल रही। सड़क, पार्क व अन्य स्थानों पर ओलों की चादर ने लोगों को कश्मीर व शिमला का अहसास करा दिया। तूफान में टीन-टप्पर उड़े, पेड़ गिरे। सैकडों पक्षी ओलों और तूफान की मार नहीं झेल सके। मकानों-घरों के शीशे टूट गए। कई लोग ओलों की मार झेलकर अस्पताल पहुंचे।

70 हेक्टेयर खेतों में होगी रबी की खेती

रांची: नामकुम के 70 हेक्टेयर खेतों में अब रबी और गरमा की भी फसल लहलहायेगी। 70 में से लगभग 20 हेक्टेयर खेतों में रबी व गरमा की फसल की शुरुआत हो चुकी है। खिजरी, कवाली, उलातु , सिदरौल, कुटियातु, मलटी, तेतरी, सहेरा, आरा, बड़ाम, बरगांवा, हरातु, महिलौंग, खरसीदाग, पलांडु ,गडके, चेने, रामपुर व अरमा में झारखंड सरकार ,भारत सरकार व गैरसरकारी संस्था केजीवीके के संयुक्त तत्वावधान में पंचवर्षीय समेकित जलछाजन परियोजना की शुरुआत की गयी है.. इस परियोजना के तहत नामकुम प्रखंड के उपरोक्त गांवों के 826.92 हेक्टेयर क्षेत्र में जलछाजन संबंधी कार्यो के अलावे आजीवीका, क्षमता विकास, पेयजल तथा स्वच्छता समेत कार्य किए जा रहे हैं.

ओलावृष्टि सर्वे की प्रारंभिक रिपोर्ट भिजवाने के दिये निर्देश

जयपुर, जिला कलक्टर श्री कृष्ण कुणाल ने जिले के विभिन्न क्षेत्रों में हुई ओलावृष्टि से हुए नुक्सान का तत्काल सर्वे कराने के लिए सभी उपखण्ड अधिकारियों एवं तहसीलदारों को निर्देश दिये हैं कि वे अपने अपने क्षेत्र में हुई ओलावृष्टि से हुए नुक्सान के सर्वे की प्रारम्भिक रिपोर्ट जिला कार्यालय में आवश्यक रूप से भिजवायें। उन्होंने उक्त राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया है कि किसानों को ओलावृष्टि से हुए नुक्सान का सर्वे कराने हेतु आज ही से संबंधित पटवारियों एवं गिरदावरों को पाबंद करें कि वे तत्परता से सम्पूर्ण क्षेत्र में ओलावृष्टि से हुए नुक्सान के सर्वे के उपरान्त निर्धारित प्रारूप में जिला कार्यालय को रिपोर्ट भिजवायें। इसमें किसी भी तरह की कोताही नहीं बरती जाये।

चारे की कमी दूर करने को अभियान

रुद्रपुर, पशुओ के चारे की कमी दूर करने की जिम्मेदारी वन पंचायतों को दी गई है। पशुपालन विभाग, पशुचारा विकास संबंधी अपनी 11 योजनाएं पहले की तरह चलाता रहेगा। पशुचारा भंडारण के लिए विभाग को राष्ट्रीय कृषि विकास योजना से धन दिया जाएगा। वन विभाग अपनी 12,000 वन पंचायतों के माध्यम से 20,000 हेक्टेयर क्षेत्र में पशुचारा की पैदावार करेगा। मुख्य सचिव ने निर्देश दिए कि कृषि, पशुपालन, जलागम और वन विभाग परस्पर समन्वय से चारा बैंक विस्तार के कार्य करें। बैठक में बताया गया कि पशुपालन विभाग ने कालसी, श्यामपुर और रूद्रपुर में चारा विकास इकाइया स्थापित की है। विभाग के 101 चारा बैंकों में 18000 मीट्रिक टन चारा जमा किया गया है। इसके बावजूद भी राज्य में एक लाख मीट्रिक टन चारे की कमी है। इसे दूर करने के लिए वन विभाग को अभियान चलाने के लिए कहा गया है।

बैठक में निर्देश दिए गए कि

शहतूत, गूलर प्रजाति जैसे ऐसे पौधे चारे के लिए लगाए जाएं, जो जंगली पशुओं के भी काम आ सकें। इसके अलावा उद्यान विभाग के फार्म का इस्तेमाल भी हरा चारा उगाने के लिए किया जाए। ग्राम्या योजना के तहत भी पशुओं के चारे का इंतजाम किया जाएगा।

बारिश से गेहूं की फसल प्रभावित

जयपुर, किसानों को परेशानी में डाल दिया है। बारिश व तेज हवा से जहां खेतों में खड़ी गेहूं की फसल जमीन पर गिर गई है, वहीं फसल के पकने के समय पर हुई बारिश से फसल को नुकसान भी हो सकता है। इन दिनों बारिश से गेहूं की कटाई देरी से होगी। वहीं, गत दिनों व अभी हुई बारिश के साथ ही तापमान गिरने से गेहूं की फसल पक नहीं पाई है। खेती विशेषज्ञों के अनुसार, इन दिनो होने वाली बारिश की वजह से गेहूं की फसल को पकने में और अधिक समय लगेगा, जिससे कटाई 10 से 12 दिन देरी से आरंभ होने के आसार हैं। बारिश से बेशक गेहूं की फसल को अभी अधिक नुकसान नहीं झेलना पड़ रहा है, लेकिन यदि तेज हवा चलती रही, तो गेहूं की फसल गिर जाने से गेहूं को बेहद नुकसान झेलना होगा।

इस वक्त होने वाली बारिश गेहूं की फसल के लिए काफी नुकसानदायक सिद्ध हो सकती है। गेहूं की फसल पकने लगी थी, लेकिन पिछले कुछ दिनों से मौसम के बदले मिजाज के बाद बारिश व तेज हवा ने गेहूं की फसल को गिरा दिया है। बारिश से जहां गेहूं का झाड़ कम होने के आसार है, वहीं कड़कती बिजली की वजह से भी गेहूं के दाने को नुकसान होता है। इन दिनों में गेहूं की फसल को तेज धूप की जरूरत है, ताकि फसल अच्छी तरह से सूख सके और गेहूं के दानों की नमी पूरी तरह खत्म हो जाए।

मगर, बारिश की वजह से गेहूं की फसल को सूखने में अब कम से कम 10 दिन अधिक लगेंगे। ऐसे में कटाई का दौर बैसाखी के बाद ही आरंभ होगा। किसान नरसी सिंह काकूवाला का कहना है कि तेज हवा से भी गेहूं की फसल को नुकसान उठाना होगा। इसके चलते गेहूं की फसल गिर गई है, जिसकी कटाई कंबाइन की बजाये मजदूर लगाकर हाथों से करवानी पड़ेगी। लेबर की गिनती कम होती जा रही है। ऐसे में कटाई के लिए आने वाले मजदूर बहुत ज्यादा कीमत मांगते हैं, जिसका अब किसानों को दोहरा खर्च उठाना पड़ेगा।

ताजी मछलियों की उपलब्धता में होगी बढ़ोत्तरी

रामपुर समेकित जलछाजन परियोजना, नामकुम के तहत बनाये गये तालाबों का लाभ ग्रामीण अपने आर्थिक विकास में सवीत्तम तरीके से कैसे ले सकें, इसे लेकर केजीवीके की ओर से कई कार्य किए जा रहे हैं। तालाब के किनारे के दोन व टांड़ भूमि में बहुफसली प्रणाली से खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है.

साथ ही तालाबों के पानी का उपयोग मछली पालन व बत्तख पालन के लिए भी किया जा रहा है। अबतक 20 नये तालाबों व आठ पुराने तालाब व डोभे में मछली के रेहू, कतला,व मृगल जैसी किस्मों के 52500 जीरों का वितरण किया गया है.. इसके अलावा 1400 बत्तख का वितरण किया गया है। रामपुर के ग्रामीण दुगुना उरांव के तालाब के आसपास गरमा धान की खेती की जा रही है. यहां के कई ग्रामीण पहली बार श्री विधि से गरमा धान की खेती कर रहे हैं। दुगुना उरांव तालाब के पानी का उपयोग टांड़ भूमि में सब्जियों की खेती व मछली पालन में भी कर रहे हैं.

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals

CONTACT NO.-022-6710-3722

EMAIL:aarti@hindchem.com

विज्ञापन हेतु संपर्क करें

ममता (मुम्बई) 08898600347

गौतम राज सारस्वत (भायंदर)09987030599

महेन्द्र दधीच (जयपुर)09462392863

दिलबाग सिंह बडेसरा (गुड़गाँव)09810026778

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Mixture
- Secondary Nutrients
- Growth Promoters
- Bio Stimulants
- Bio Fungicide
- Bio Insecticide
- Bactericide
- Wetting Agent
- Zyme
- Tonic

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL

MR. ALOK BENIWAL

MOB: 9660258447

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**

contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,**Email:info@srushtiagronews.com**, **website:www.srushtiagronews.com**. **RNI No.MAHHIN/2013/49425**